भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 16 | उदयपुर रविवार 01 सितम्बर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भारतीय लोककला में शिव का प्रभाव

– जोगेन्द्र सक्सेना –

शिव का सार्वभौम प्रभाव भारतीय साहित्य, कला, संस्कृति, लोकजीवन आदि में सर्वत्र रूप में परिलक्षित है। इन सभी विधाओं में शिव ऐसे घुलमिल गये है कि एक के बिना दूसरी अर्थहीन हो जाती है, निरर्थक बन जाती है। शिव का भारत में कब, कैसे, क्यों और किन परिस्थितियों में प्रादुर्भाव हुआ, यह हमारा विषय नहीं है किन्तु यह निर्विवाद है कि पिछले पांच हजार वर्षों से उनके अनेकानेक रूप हम अपने कला, साहित्य, धर्म और दर्शन में देखते चले आ रह हैं। लोकजीवन पर तो वे ऐसे छा गये हैं कि कोई भी हिन्दू घर कैसी ही स्थिति, कैसी ही श्रेणी, किसी भी जात का क्यों न हो, उनके चित्र अथवा उनके प्रतीक चिन्ह शिवलिंग के बिना सूना लगता है।

जो देवता लोकजीवन में इतना घुलमिल गया हो, उससे लोकसाहित्य, लोकगीत, लोककला आदि अछूते कैसे रह सकते हैं। वह तो फिर उनमें सहत्र धारा रूप में प्रवाहित होता है। धार्मिक लोककला की दृष्टि से भारत के सभी देवी-देवताओं का प्रतिमा रूप में आरम्भ सिंधु घाटी संस्कृति के पशुपति और मां भगवतीदेवी से हुआ लगता है। इनमें हड़प्पा से प्राप्त पशुपति, शिव को योगी के रूप में दिखाया गया है। उनके चार मुख हैं। वे पद्मासनासीन हैं और चार पशुओं यथा- हाथी, शेर, गेंडा और भैंसा से घिरे हुए हैं। उनके ये चार मुख चारों दिशाओं के द्योतक हैं। सिन्धुकालीन यह परम्परा हमें सारनाथ के तीन शताब्दी ईसा पूर्व के मौर्यकालीन स्तम्भ पर अंकित चार पशुओं यथा- हाथी, शेर, अश्व और में देखने को मिलती है।

जिस आसन पर पशुपति बैठे हैं उसके नीचे एक हिरन दिखाया गया है। इसका भी हमें आगे चलकर धार्मिक आख्यानों में प्रमाण मिलता है। उसका सम्बन्ध भगवान बुद्ध से है। सारनाथ के मृगदाय वन में दिये गये बुद्ध के प्रवचनों में हिरण का उल्लेख है। सिन्धु घाटी के उत्खनन से प्राप्त अन्य सामग्री में शिवलिंग और योगी भी पाये गये हैं। वे मिट्टी से बने हुए हैं और पकाये हुए हैं। उनकी गढ़त और बनावट से वे लोककला की कृतियां स्पष्ट जान पड़ती हैं।

लोकजीवन की उस काल की यह परम्परा आज भी लोककला में देखने को मिलती है। यह अवश्य है कि रूप उसका भिन्न है, किन्तु मान्यताएं और विश्वास तो वही है। राजस्थान में शिव और गणेश लोककलाकार के प्रिय विषय हैं। यहां शादी के अवसर पर और कन्या के घरों के द्वारों पर चित्रकारी की जाती है। उसमें अनेकों प्रकार की सजावट की वस्तुएं होती हैं। इनमें शिव का स्थान प्रमुख होता है। ये चित्रकार पुरुष होते हैं और वे शिव को आमतौर पर योग मुद्रा में चित्रित करते हैं। इसके विपरीत स्त्री कलाकार उनके दाम्पत्य जीवन का चित्रण करती है। उत्तरप्रदेश में बनाये जाने वाले दीपावली के चित्रपटों में शिव और पार्वती को एक ही पलंग पर बैठा हुआ दर्शाया जाता है। शिव का यह स्वरूप कल्याणकारी है और स्त्रियां अपने सुख और सौभाग्य की कामना करती हुई उनके इसी मंगलकारी रूप का चित्रण करती हैं।

इसी प्रकार करवा चौथ और अहोई अष्टमी पर बनाये जाने वाले चित्रपटों में शिव और पार्वती एक ही पलंग पर बैठे हुए दिखाये जाते हैं। इसमें पार्वती की गोदी में गणेश को भी अंकित किया जाता है। करवा चौथ का व्रत स्त्रियों के सौभाग्य के लिए किया जाने वाला व्रत है। अतएव वे इस अवसर पर शिव-पार्वती का दम्पत्ति के रूप में चित्रण करके अपने सुहाग को अक्षुण्ण बनाने की कामना करती हैं।

अहोई अष्टमी का व्रत करके मां अपने लड़कों के शुभ की कामना करती है। इसके चित्र-पटों में पार्वती की गोदी में गणेश को अंकित करने का भाव यही है कि वे उनके पुत्रों को आयुष्मान बनायें, चिर-जीवी करें ताकि वे उनकी सेवा का सुख उठा सकें।

लोकजीवन में शिव और पार्वती का सम्मिलित स्वरूप सुख और सौभाग्य का द्योतक माना जाता है। ऐसी अनेकों लोककथाएं हैं जिनमें शिव-पार्वती का रात्रि के समय विचरण करने का उल्लेख मिलता है। इस जन विश्वास के अनुसार यह परोपकारी दम्पत्ति रात्रि में दीन-दु:खियों की सुध लेने के लिए विचरण करते हैं। करवा चौथ के व्रत के अवसर पर कही जाने वाली कहानी के अनुसार शिव-पार्वती अपने इस रात्रि विचरण काल में एक ऐसी स्त्री के निकट पहुंचते हैं जो अपनी गोदी में मृत पति का सिर रखे विलाप कर रही है। पार्वती उसके करूण क्रन्दन से द्रवित होकर वहीं ठहर जाती है और शिवजी को रूकने का अनुरोध करती है। शिवजी न चाहते हुए भी अपनी भार्या के साथ वहीं रूक कर उसकी करूण गाथा सुनते हैं और पार्वती उसे सौभाग्य दान करती है। अहोई अष्टमी की कहानी के अनुसार वे ऐसी ही दु:खी माता को उसके पुत्र का जीवन दान करते हैं।

शिव के इसी कल्याणकारी स्वरूप ने उन्हें लोकजीवन में इतना प्रिय बना दिया है। वे संहारक हैं किन्तु जीवनदाता भी हैं। वे निष्प्रयोजन, निर्लिप्त और जनजीवन से दूर गिरि कन्दराओं के वासी हैं किन्तु साथ में सरल, उदार और दयावान भी हैं। दीन-दु:खियों के कष्टों से शीघ्र द्रवित हो जाते हैं और अपनी अर्धांगिनी के अनुरोध पर हरे हुए जीवन को भी वापस लौटा देते हैं। शिव का दूसरा नाम 'हर' है। इसका धातु 'हृ' है और वे 'हरित' अर्थात् सभी प्रकार के अशुभ को हरण करने वाले हैं। तो ऐसे दु:ख दर्द को दूर करने वाले देवता को कौन नहीं चाहेगा। कौन उनकी वन्दना नहीं करेगा?

शिव को महादेव अर्थात् देवाधिदेव भी कहा जाता है। यह उनका सामरिक स्वरूप है जिसका चित्रण बंगाल की लोककला में देखने को मिलता है। बंगाल के नवद्वीप क्षेत्र में शिव की ऐसी मूर्तियां बनाई जाती हैं जिनमें उन्हें फौजी बाने में दिखाया जाता है। उनके सिर पर ऊंची-ऊंची धारियों वाला सोने का शिरस्त्राण होता है जिसके मध्य में ऊपर उठा हुआ लिंग-पट्ट अर्थात् मिलन अर्थात् संयुक्त चिन्ह होता है और उसके चारों ओर होते हैं फन उठाये हुए चार नाग।

श्री सुधाशुंकुमार राय ने इसे अपनी पुस्तक 'व्रत आर्ट ऑफ बंगाल' में लोक मूर्तिकारों द्वारा बनाया गया मिट्टी का एक खिलौना मात्र नहीं माना है। उनकी दृष्टि में इसका अर्थ कुछ और ही है। उनके मतानुसार शिव के सिर पर शिरस्त्राण के मध्य में ऊपर उठा हुआ 'लिंग-पट्ट' दो प्रदेशों के राजाओं के मुकुटों को मिलाकर प्रतीक रूप में एक कर दिया गया है। अर्थात् जब एक प्रदेश के राजा ने दूसरे प्रदेश को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया तो उसने उस विजित प्रदेश को सम्मान देने और उस प्रदेश को अपने अधीन कर लेने की दृष्टि से उसके मुकुट में मिला लिया और दोनों को मिला कर एक कर लिया। उनके अनुसार यह एक ऐसे देव सम्राट का चित्रण है जो देश के दो राजनैतिक भागों का, साधारणतया उत्तर और दक्षिण का राजा है।

बंगाल में 'दक्षिणदार' नाम की मृणमूर्तियां भी मिलती हैं। 'बरिन' अर्थात् 'उत्तरदार' नामक मूर्ति का उल्लेख किया गया है। जैसा कि हमें सिंधुघाटी के उत्खनन से ज्ञात होता है। उसके भी दो राजनैतिक भाग थे। उत्तर में 'हड़प्पा' और नीचे लगभग चार सौ मील दक्षिण में 'मोहनजोदड़ो'। दोनों ही समृद्धिशाली नगर थे और सम्भवत: वे अपने-अपने प्रदेश की राजधानियां रही हों। तो क्या इन दोनों दूरस्थ स्थलों अथवा दो राज्यों का कोई एक ही सम्राट था और बंगाल में पाये जाने वाले योद्धा शिव के समान दोनों राज्यों का संयुक्त मुकुट धारण किया करता था?

किन्तु चूंकि अपने आप में एक अलग से खोज का विषय बन सकता है और चूंकि इसका वर्तमान विषय से सीधा सम्बन्ध नहीं इसलिये इस पर यहां विचार करना अप्रयोजनीय है किन्तु इतना अवश्य ही आवश्यक है कि बंगाल में एक प्रचलित प्रथा के अनुसार विवाह हो जाने के पश्चात वर-वधू के मुकुट को लेकर अपने मुकुट में मिला लेता है और वह उन दोनों के मिलन का द्योतक होता है। इसी प्रकार मिश्र देश के राजा जिन्हें पेरों कहा जाता था, अपने उत्तर और दक्षिण के दो राज्यों का संयुक्त मुकुट धारण किया करते थे।

शिव का यह सर्वथा अभिनव रूप है जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। वह कौनसा युग था जिसमें शिव सत्ताधारी रहे और जिसकी स्मृति बंगाल की इस लोक कृति में आज भी सुरक्षित है।

शिव का प्रभाव भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भी था। यह उपलब्ध प्रमाणों से सिद्ध होता है। दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'हिन्दुस्तान टाइम्स' नामक अंग्रेजी दैनिक में छपी एक टिप्पणी में श्री पी. एन. ओक द्वारा वेटिकन सिटी के संग्रहालय में एक शिवलिंग की खोज करने की चर्चा थी। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका का हवाला देते हुए श्री ओक ने बताया था कि इटली, रोम साम्राज्य से पहले चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में एट्रस्कन नामक जाति का साम्राज्य था। वह जाति शिव की पूजा करती थी और उन्हें 'अईस' के नाम से पुकारती थी। ईश्वर 'अईस' का बहुवचन था।

इसी प्रकार स्वामी शंकरानन्द ने अपनी पुस्तक 'द लास्ट डेज ऑफ मोहनजोदड़ो' में जटलैण्ज में पशुपति शिव की मूर्ति प्राप्त होने की चर्चा की है। यह मूर्ति हड़प्पा से प्राप्त पशुपति की मूर्ति से काफी मिलती है। अन्तर केवल इतना है कि उनके एक मुख है। सिर पर बारह सींगा के सींग हैं। वे भी पालथी मारे योग मुद्रा में बैठे हैं। उनके बांये हाथ में नाग और दाहिने हाथ में कलम है। वे भूमि पर बैठे हैं इसलिए आसन के नीचे हिरण नहीं है। पशु उनको चारों ओर से घेरे खड़े हैं। चित्र से यह मूर्ति लोककलाकार की कृति जान पड़ती है। इसके अतिरिक्त भारत का पड़ोसी और एक मात्र हिन्दू राज्य नेपाल तो शिवभक्तों का गढ़ ही है। वहां तो पशुपतिनाथ साक्षात् विराजित हैं।

पारुत्थ : राजा नरवर्म्मन की मुद्रा

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

मालवा के परमार वंशी शासकों में भोजदेव के बाद नरवर्म्मा (1094-1133 ई.) कवित्व गुण सम्पन्न शासक हुआ। इन दोनों ही शासकों ने मंच, मचान और महासमर रचे। अपनी मुद्राएं चलाई और अपने हस्ताक्षरों से ताम्रपत्र भी जारी किए। नागपुर के संग्रहालय में नरवर्म्मा का स्वलिखित ताम्रपत्र अभिलेख संग्रहित है। एक ताम्रपत्र जेम्स टॉड को भी मिला था।

नरवर्म्मा की मुद्रा का नाम 'पारुत्थ' था। रूपा या चांदी पर यह नामकरण हुआ। यह मेवाड़ी चांदी से ही तैयार हुई और बहुत सुंदर होने से संग्रह में रखी जाने लगी। यह नाम नरवर्म्मा के काल के चित्तौड़गढ़ में मिले 78 श्लोकों वाले शिलालेख में आया है -

प्रतिरविसंक्रान्ति ददौ पारुत्थ
द्वितयमिह जिनार्चार्थम्।
श्री चित्रकूट पिण्ठा
मार्गादायात् नृवर्म्म नृप।। (श्लोक 73)

मतलब यह हुआ कि राजा नरवर्म्मा ने चित्तौड़गढ़ के महावीर चैत्य में जिन अर्चना के लिए हर सूर्य संक्रांति पर दो दो पारुत्थ देने की आज्ञा दी। (मेवाड़ का प्रारम्भिक इतिहास -श्रीकृष्ण 'जुगनू')

इसका अर्थ यह भी है कि मेवाड़ में यह पारुत्थ मुद्रा प्रचलन में रही। यह बड़ी और सुवर्ण मुद्रा रही। हालांकि तब टंकक राजमुद्रा भी चलन में रही, विदिशा के पास अमेरा के तालाब के संवत् 1151 के अभिलेख में उसका नाम है। नरवर्म्मा की इस नवीनतम मुद्रा के चित्त भाग पर लक्ष्मी देवी विराजमान है और पटभाग पर देवनागरी लिपि में उत्कीर्ण है - श्रीमान्नरवर्म्म देव। तौल में यह साढ़े चार माशा की है।

नरवर्म्मा के शासन में मेवाड़ का बड़ा हिस्सा रहा। मुंजराज से लेकर नरवर्म्मा तक यह प्रदेश परमारों के अधिकार में रहा। नरवर्म्मा का एक अभिलेख उदयपुर के पास डबोक से 1935 में मिला जिसका पाठ हाल ही मैंने तैयार किया है। इसकी सातवीं पंक्ति में 'नरवर्म्मन विजय राज्य' है और कायस्थ महापति द्वारा दो शिवालय बनवाने का संदर्भ है। इसी समय उदयपुर-जोधपुर मार्ग पर पालड़ी का पाशुपत शिव मन्दिर बना जिसके अभिलेख में आघाटपति वैरिसिंह और विजयसिंह के नाम और गुहिल वंश की प्रशंसा की गई है। विजयसिंह की पत्नी नरवर्म्मा के परिवार की थी। नाम था श्यामलदेवी। इस वैवाहिक संबंध पर अभी तक कोई काम नहीं हुआ है।

अनायास मिले मित्रों से प्रेरित होने का सुख

लखनऊ की वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री विद्याविन्दुसिंह बताती हैं कि मेरी जिन्दगी में दो मित्र मुझे अनायास मिले जो मेरी जिन्दगी के अभिन्न अंग बन गए।

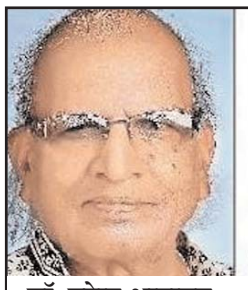
डॉ. महेन्द्र भानावत

विद्याविन्दुसिंह

मालती शर्मा

उन्होंने मुझे बहुत कुछ लिखने की प्रेरणा दी। जब मैं पीएच.डी. कर रही थीं तब मेरे साहित्य से प्रभावित होकर पुणे की मालती शर्मा और भ्रात सम उदयपुर के डॉ. महेन्द्र भानावत ने मुझे खत लिखने शुरू किये। उनके पत्रों में प्रशंसा के साथ सुझाव भी होते थे।

धीरे-धीरे हम पत्र मित्र बन गए। लगभग 10 साल बाद हम तीनों उदयपुर में भील-गवरी उत्सव में मिले। तब फोटो शेयर करने का ऑप्शन नहीं होता था इसलिए हम एक दूसरे को शक्ल से नहीं जानते थे। जब उस उत्सव में तीनों का नाम लिया गया तो हम पहली बार एक-दूसरे से मिले और कुछ ऐसे मिले जैसे बरसों से बिछड़े दोस्त मिलते हैं। उसके बाद से आत्मीयता का अटूट रिश्ता जुड़ गया। मुझे हमेशा उन लोगों ने नया रचने के लिए प्रेरित किया और मैंने भी जिन्दगी में कई सुखद अनुभव उनके साथ ही पाए।

पोथीखाना

'स्मृतियों की सुगन्ध' स्तरीय संस्मरण-प्रकाशन

संस्मरण अतीत की यादों की भावाभिव्यक्ति है। पूर्व में हम किसी व्यक्ति विशेष के सम्पर्क या किसी स्थान, दृश्य को देखी स्मृतियों का अपने शब्दों में प्रस्तुतीकरण संस्मरण ही है। हम जब किसी से मिलते हैं तो उनका व्यवहार, आचरण, अच्छे-बूरे पक्ष हमारे सामने आते हैं। इसी प्रकार किसी दृश्य को देखा या स्थान विशेष में अनुभव किया हुआ समय जब हमारे स्मृति-पटल पर कौंधता है तो उन अतीत की यादों का एक शब्द-चित्र बनता है। इसी शब्द-चित्र या यादों को शब्दों में गूंथ कर उसे संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

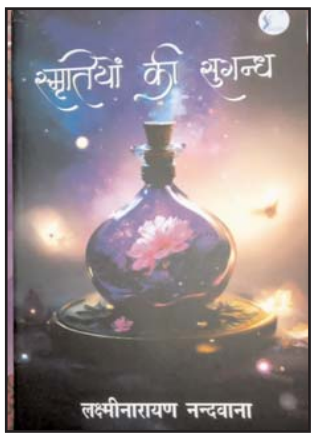

डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना उदयपुर स्थित राजस्थान साहित्य अकादमी में दीर्घ अवधि तक सेवारत रहे, सचिव का दायित्व वहन किया था, उसका सुखद लाभ उन्होंने प्राप्त किया और वे जिन साहित्यकारों, मनीषियों या विद्वानों के सम्पर्क में आये, उनसे बातचीत की, साथ रहे, उनकी सुखद स्मृतियों को संजोकर 'स्मृतियों की सुगन्ध' नाम से प्रकाशन प्रस्तुत किया है।

'स्मृतियों की सुगन्ध' में 38 साहित्यकारों-महानुभवों के साथ व्यतीत समय की स्मृतियां है। डॉ. नन्दवाना ने उन्हें बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यवस्थित रूप से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। इनमें से कुछ नाम तो ऐसे हैं जिन्हें देखकर हम चौंक सकते हैं। उन्हें शायद हम भूल से गए हैं। कुछ ऐसे मनीषी हैं जो राजनीति के शीर्ष पर रहे और साहित्यिक लेखन में भी अग्रणी रहे। यथा- हरिभाऊ उपाध्याय, जनार्दनराय नागर, निरंजननाथ आचार्य, विष्णुकांत शास्त्री, दयाकृष्ण विजय आदि। हम जब इस प्रकाशन को देखते हैं तो उनमें अनेक विशिष्ट साहित्यकारों के संस्मरण मिलते हैं।

संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित मनीषी कवि सम्राट विद्याधर शास्त्री, पत्रकारिता के दिग्गज सम्पादक-लेखक साहित्य वाचस्पति पं. झाबरमल शर्मा, प्रभाष जोशी, कर्पूरचन्द 'कुलिश' वागड़ के सरस्वती पुत्र ज्ञानपीठ से पुरस्कृत मनीषी पन्नालाल पटेल, साहित्य और इतिहास के प्रकाश पुंज डॉ. रघुवीरसिंह, भ्रमरानन्द पं. विद्यानिवास मिश्र, राजस्थानी परम्परा और आस्था की प्रतीक लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, मानव मन की ग्रन्थियों के पारखी अज्ञेय, खुशबू फैलाने सारस्वत से स्वामी बने साहित्यकार डॉ. ओमानन्द, साहित्य के विशेषज्ञ कोमल कोठारी, सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नामवरसिंह, डॉ. रमेश कुन्तल 'मेघ', नन्द चतुर्वेदी, डॉ. नवलकिशोर, डॉ. आलमशाह खान, हमीदुल्ला, मधुप शर्मा, सावित्री परमार, श्रीमती मन्नू भण्डारी आदि के संस्मरण इसमें सम्मिलित हैं।

डॉ. नन्दवाना ने सहज सरल शब्दों में इन संस्मरणों को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है या यों कहें हिन्दी साहित्य के संस्मरण भण्डार में यह पुष्प भेंट किया है।

इस पुस्तक के प्रकाशक कौटिल्य बुक्स सैक्टर 11, रोहिणी नई दिल्ली है। 164 पृष्ठीय इस प्रकाशन का मूल्य 399 रूपये है। पुस्तक का गेटअप आकर्षक और सुन्दर है। आशा है, सहृदय पाठक 'स्मृतियों की सुगन्ध' का स्वागत करेंगे।

- डॉ. तुक्तक भानावत

पत्र पिटारी

भक्तामर स्तोत्र पर उम्दा जानकारी

शब्द रंजन (पाक्षिक) का अगस्त 2024 (प्रथम) का अंक मिला। प्रथम पृष्ठ पर 'स्तोत्रों में एक कालजयी स्तोत्र भक्तामर स्तोत्र' शीर्षक के साथ डॉ. भानावत ने अपनी निराली शैली में भक्तामर स्तोत्र के बारे में अच्छा लिखा।

भक्तामार के राजस्थानी (मेवाड़ी) अनुवादक विपिन जी जारोली का सचित्र उल्लेख भी किया। उनके द्वारा किया गया पद्यानुवाद बहुत लोकप्रिय है। इस अनुवाद के बारे में डॉ. नेमीचंद जैन ने लिखा था- ''यह स्वल्पाक्षरित है और आंचलिक होते हुए भी सार्वदेशिक किस्म का है। इतना सुंदर, सटीक, समस्त, समधुर, सपराक्रम अनुवाद पहली बार किसी लोकभाषा में आया है।''

विपिन जी को उनके इस अनुवाद के लिए युगधारा के अंतर्गत 'कन्हैयालाल धींग राजस्थानी पुरस्कार' (2006) से सम्मनित किये जाने पर हमें बहुत प्रसन्नता हुई। उनके सम्मान से पुरस्कार का गौरव बढ़ा। उदयपुर के राजमहल (सिटी पैलेस) में सम्मान ग्रहण करने के उपरांत उन्होंने जो भावपूर्ण उद्बोधन दिया था, उसे मेरे दादाभाई सुरेशचंद्र धींग आज भी याद करते हैं।

भक्तामर की महिमा अपार है। श्रीचंद सुराना ने सचित्र भक्तामर की पुस्तक जब तत्कालीन राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा को भेंट की थी, तो राष्ट्रपति ने कहा था कि उनके पिताजी भक्तामार का पाठ भी करते थे और सिखाते भी थे। अहिंदी प्रदेश तमिलनाडु में भी भक्तामर का अद्भुत प्रभाव है। अनेक तमिल जैन बन्धु, जिन्हें संस्कृत और हिन्दी भाषाएं नहीं आती हैं, उन्हें भी भक्तामर कंठस्थ है, और वे इसका पाठ भी करते हैं।

अगरचंद मानमल जैन महाविद्यालय, चेन्नई में पिछले तीस सालों से प्रतिवर्ष तमिलनाडु के विद्यालय-महाविद्यालय स्तर पर भक्तामर स्तोत्र पाठ प्रतियोगिता होती है। विभिन्न श्रेणियों में अनेक पुरस्कार दिये जाते हैं। विशेषता यह है कि हर साल अनेक श्रेणियों में तमिलभाषी विद्यार्थी विजेता बनते हैं। हाँ, आत्मज प्रणत धींग ने भी इस कड़ी स्पर्धा में कई बार विजयश्री प्राप्त की।

चेन्नई के पूळल क्षेत्र में स्थित प्राचीन केसरवाड़ी जैन तीर्थ में भक्तामर मंदिर है, जिसमें मार्बल पर संस्कृत भाषा में एक-एक श्लोक लिखा है।

प्रत्येक श्लोक का हिंदी अनुवाद, यंत्र, मंत्र और चित्र भी श्वेत पाषाण पर उत्कीर्ण है। इस मंदिर में भगवान ऋषभदेव तथा बंधन मुक्त होते आचार्य मानतुंग की मूर्तियों के अतिरिक्त हाथी पर बैठी माता मरुदेवी भगवान ऋषभदेव को निहारती हुई केवलज्ञान प्राप्त करती प्रतिमा भी है। रोचक तथ्य यह है कि उक्त तीर्थ का नाम केसरवाड़ी (केशरवाड़ी) इसलिए है कि यहां जो भगवान आदिनाथ की प्रतिमा है, वह मेवाड़ में विराजित प्रथम तीर्थंकर केसरियाजी (ऋषभदेव) की प्रतिमा से मिलती जुलती है। इस तीर्थ को राजस्थान और तमिलनाडु के सांस्कृतिक चिरसंबंध का एक उदाहरण कहा जा सकता है।

भक्तामर के चमत्कार के अनेक प्रसंग मेरी माताजी उमरावदेवी धींग (बाईजी) और मेरे जीवन से भी जुड़े हैं। आपने ऐसे अमर स्तोत्र भक्तामर पर शब्द रंजन में लिखा, इसे भी एक प्रकार से स्तुति कह सकते हैं। डॉ. भानावत को बहुत बहुत धन्यवाद।

- डॉ. दिलीप धींग

शब्द रंजन के 1 अगस्त 2024 के अंक में भक्तामर स्तोत्र पर आदरणीय डॉ. महेंद्रजी का आलेख बहुत ज्ञानवर्धक है। भक्तामर भारती की सूचना बड़ी महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार श्री दिनेशचंद्र भारद्वाज का आलेख राजस्थानी लोक जीवन में जल-मानस में जल की महिमा स्थापित हुई है। लेखकों को बधाई और आपको भी कि शब्द रंजन की निरन्तरता बनाए हुए हैं विकास के साथ।

- प्रोफेसर प्रेमसुमन जैन

अपना देश अपनी संस्कृति

सोने की निसरनी

सोने की निसरनी पर हर कोई नहीं चढ़ सकता। वही दंपति चढ़ने का अधिकारी है जिसने अपने जीते जी अपना पड़पोता देख लिया है। दादाबा-दादीमां में से यदि दोनों जीवित न हों तो किसी एक के जीवित होने पर भी इसका आयोजन कर लिया जाता है। शादी-विवाह की तरह इसमें गाजेबाजे और उतना रागरंग नहीं होता। केवल हैसियत के अनुसार दो-चार-आठ मासे से लेकर आधा, एक-दो-चार-दस तोले तक की निसरनी बनवाकर उसके पैर का अंगूठा छुआ दिया जाता है। कहीं-कहीं चांदी की निसरनी भी छुआने का प्रचलन है। यह आयोजन पड़पोता होने की स्थिति में ही किया जाता है, लड़की यानी पड़पोती होने पर नहीं।

पिछले दिनों एक समधी निमंत्रण देने आये कि फलाणाजी के पड़पोता हुआ है सो सोने की निसरनी पर चढ़ने का कार्यक्रम है। उसमें उनके कई समधी, बहिन-बेटियाँ, साला-जंवाई, नाती-पोती सब इकट्ठे होंगे अत: मुझे भी उसमें सम्मिलित होना है। वैसे इसमें मेरा जाना आवश्यक नहीं था पर मुझे उत्सुकता हुई इसे देखने, इसके अध्ययन करने की। सो मैं चला गया।

वहाँ जाकर देखा तो विवाह सा माहौल था। दूर-नजदीक के सारे समधी वहां एकत्र हुए। विवाह जैसी ही हंसियाँ- खुशियाँ थीं। लोगबाग कह रहे थे कि अच्छे पुण्य करने वालों को ही सोने की निसरती पर चढ़ने का सौभाग्य मिलता है। एक सज्जन तो कह रहे थे कि गत 60 वर्षों में इस परिवार में कोई सोने की निसरनी पर नहीं चढ़ पाया। अच्छे-अच्छे राजा-महाराजाओं तक को नसीब नहीं हो पाता है। संतानों के लिये लोग भटकते रहते हैं। आज भगवान की दया से इस घर में यह अवसर आया है। पैसा तो हाथ का मैल है। ऐसा उछब कहां होगा? ब्याह-शादी तो आप हमारे होते ही रहेंगे पर यह मौका ही कुछ दूसरा है। ऐसी अनेकानेक बातें मेरे सुनने में आईं।

सोने की निसरनी पर हर कोई नहीं चढ़ सकता। वही दंपति चढ़ने का अधिकारी है जिसने अपने जीते जी अपना पड़पोता देख लिया है। उसके लाड़ लड़ा लिये हैं। पड़पोता यानी अपने पुत्र के पुत्र का पुत्र। तो निसरनी पर चढ़ने वाले हुए दादाबा और दादीबाई (माई)। निसरनी पर चढ़ने को रस्म प्राय: पड़पोते की सूर्य पूजा के दिन की जाती है पर इसके बाद भी कभी भी की जा सकती है मगर लड़का छोटा ही हो तब यह रस्म कर ली जाती है।

दादाबा-दादीमां में से यदि दोनों जीवित न हों तो किसी एक के जीवित होने पर भी इसका आयोजन कर लिया जाता है। मैंने इसमें एक अच्छी बात यह पाई कि ऐसे अवसरों पर प्राय: पुरुष ही अधिक उभर कर आता है मगर इसमें यदि दादीमां अकेली जीवित है तो उसके लिये भी वैसा ही समारोह आयोजित होता है। शादी-विवाह की तरह इसमें गाजेबाजे और उतना रागरंग नहीं होता।

केवल हैसियत के अनुसार दो-चार-आठ मासे से लेकर आधा, एक-दो-चार-दस तोले तक की निसरनी बनवाकर उसके पैर का अंगूठा छुआ दिया जाता है। इसी से यह रस्म पूर्ण हुई समझ ली जाती है। कहीं-कहीं चांदी की निसरनी भी छुआने का प्रचलन है। निसरनी का यह सोना घरधनी स्वयं नहीं रखकर बहिन-बेटियों में बांट देता है। यह आयोजन पड़पोता होने की स्थिति में ही किया जाता है, लड़की यानी पड़पोती होने पर नहीं।

इसमें जितने भी समधी आते हैं उस बच्चे के लिए झगले, टोपी या अन्य भेंट भेंटावण लाते हैं। अधिक निकट के लोग कुछ अच्छी भेंटें लाते हैं। पड़पोते की मां के लिये उसके पीहर वाले पूरी पोशाक लाते हैं। निसरनी पर चढ़ने के पीछे जहाँ सुख, समृद्धि और संपन्नता बने रहने की भावना निहित है वहाँ निसरनी चढ़ने वाला दीर्घ आयु प्राप्त करेगा, यह भी माना जाता है।

- म. भा.

स्मृतियों के शिखर (189) : डॉ. महेन्द्र भानावत

जीवजगत के प्रमुख आश्रम हैं जन और वन

वृक्ष मानव की जीवन रेखा है। मानव के सारे संकटों की सुरक्षा का दायित्व वृक्ष से जुड़ा है। वे वृक्ष ही हैं जो पर्यावरण के संतुलन को बनाये रखते हैं। यही कारण है कि मनुष्य अपने प्रारंभिक काल से ही पर्यावरण से अपना अन्योन्याश्रित संबंध जोड़े हुए है। इसीलिए जन और वन जीवजगत के दो सबसे प्रमुख आश्रय-आश्रम हैं। इनमें से जब एक भी गड़बड़ाता है तो दूसरे पर संकट आ पड़ता है और दोनों का जीवन डगमगाता लगता है। दोनों मिलकर सृष्टि के सौंदर्य को परिपूरित करते हैं।

इनमें मनुष्य का महत्त्व बढ़कर बताया गया है। संसार में चौरासी लाख की जीव योनियों में मनुष्य योनि सबसे बढ़चढ़कर कही गई है। लोकमान्यताओं और शास्त्रों में वर्णित संदर्भों में भी मनुष्य योनि ही सर्वोत्तम पायदान पर स्वीकारी गई है। यहां तक कि देव योनि भी मानव योनि को ही महत्त्व देती आई है। धरती पर आने के लिए, मनुष्य लोक में विचरण करने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं। वह मनुष्य ही है जिसमें समग्र योनियों को जानने, अभिव्यक्त करने तथा उसके रहस्यों को खोजने-खोलने की क्षमता मिली हुई है। धरती पर मनुष्य ने अपने बुद्धि-चातुर्य, ज्ञान-संपदा तथा पौरूष के रहते सदैव ही नया कुछ करने की बलवती जिज्ञासा रखी इसीलिए उसकी नवीनतम खोजों ने विश्व को सदैव ही नव नवोन्मेष देते रहने की ऊर्जा दी है। प्रकृति के श्रेष्ठतम कवि सुमित्रानंदन पंत ने 'मानव तुम सबसे सुंदरतम' कह कर मनुष्य को सबसे श्रेष्ठतम सौंदर्यजीवी उपासक कहते उसकी अभ्यर्थना की।

मनुष्य श्रेष्ठतम प्राणी :

ऐसे अनेक स्थल हैं जब जहां-जहां मनुष्यों का जुड़ाव होता है वहां-वहां उनका बाना धारण कर देवता उनके बीच, उनके साथ धरती पर, मृत्युलोक में आकर अपनी लीला, कौतुक तथा करिश्माई करतब कर सबको आश्चर्य में डाल देते हैं। कुंभ, अर्धकुंभ जैसे मेलों के अलावा विभिन्न स्थानों पर लगने वाले मेलों, आदिवासियों एवं जनजातियों से जुड़े धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आयोजनों में ऐसे दृश्य प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में हमारे दृष्टि-बिंब याकि अनुभूतिपूरक हिस्से बनते हैं।

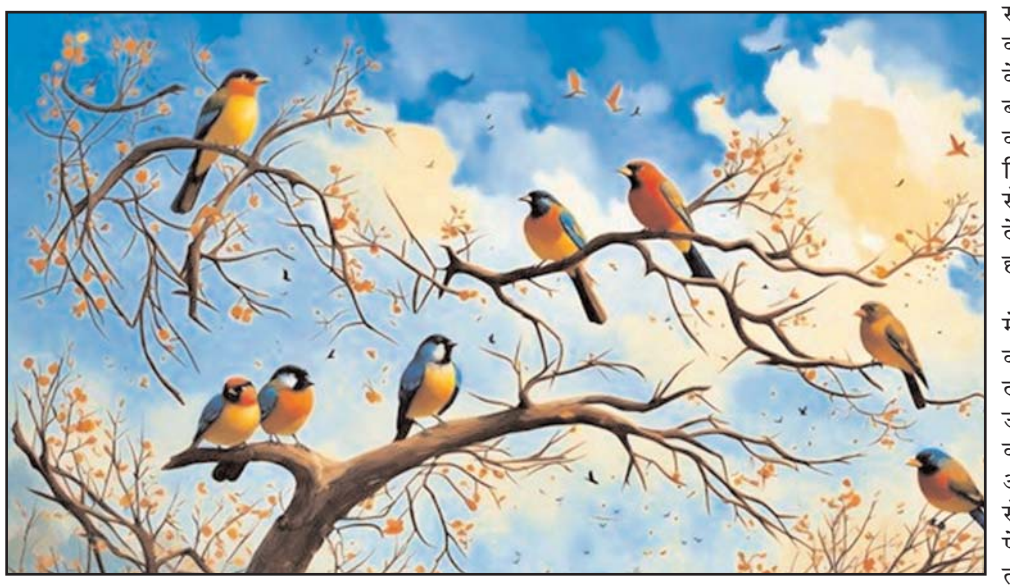

वृक्ष देवता हैं। हमारी जीवनशक्ति हैं। हमारी संस्कृति के रखवाले हैं। हमारी सभ्यता के सुमेरु हैं। हमारे संस्कारों के बहीवाचक हैं। हमारे वंशजों के पुरखे हैं। धरती पर हम इन्हें बड़ी आजीजी कर, मनौती मनुहार कर लाये हैं। इसीलिए जब-जब इन पर संकट छाया, मनुष्य ने इनकी हर प्रकारेण रक्षा की और अन्ततोगत्वा अपना उत्सर्ग तक कर दिया।

पहला वृक्ष पाताल से :

आदिवासी समाज में कंठासीन 'रूंख पुराण' में कथा-कथन मिलता है जिसमें देवी अम्बाव अनेक मुसीबतें पार कर सातवें पाताल से राजा वासक की बाड़ी से बड़ी मनौती से बड़ल्या लाकर मृत्युलोक में हींदवा नामक स्थान पर स्थापित करती है। भारत नाम से यह रूंख गाथा भीली नृत्य गवरी के प्रारंभ में सृष्टि के मूल रचाव को अभिव्यक्त करती है।

यह वट वृक्ष, बड़-बड़ल्या बारह बीघे का फैलाव लिये था। थाली जितने बड़े पत्ते तथा सुनहरी कोंपलों वाला यह वृक्ष एक चट्टान पर स्थिर किया और दूध-दही से सींचा गया। यह वृक्ष अकेला नहीं, इसके साथ अन्य वृक्षों तथा फूलजनित पौधों को भी लाया गया। गवरी नृत्य के प्रथम शोध-अध्येता के रूप में मैंने बड़े विस्तार से इस पर लिखा है।

राजस्थान में वृक्षों की सर्वाधिक महिमा है। यहां हर वृक्ष-वल्लरी में भगवान का निवास है। अनेक पर्वोत्सवों पर वृक्ष पूजा का माहात्म्य है। वृक्षों की पूजा-परिक्रमा की जाकर सुखी-समृद्ध जीवन की कामना की जाती है। वृक्ष को किसी तरह की हानि पहुंचाने को अपराध समझ प्रायश्चित किया जाता है। पत्ता और डाली भी तोड़ी जाती है तो पहले उसे नमन कर मौन स्वीकृति ली जाती है। ऊंगली की सहायता से बड़े अदब से डाल-पात पाया जाता है यहां तक कि छाल तक हल्के नाखून से उतारी जाती है।

वृक्ष हमारी संजीवनी हैं। इनसे हमें शुद्ध हवा-पानी, फल-फूल, रोटी-रूजक तथा सहारा-आसरा मिलता है। मुश्किल वक्त में वृक्ष बड़े सहायक तथा संबल प्रदाता होते हैं पर इन पर डागले, घर, मचान और मकान मनुष्य को अनेक खतरों से बचाते हैं। पंछियों के आश्रय स्थल तो अनेक वृक्ष ऐसे हैं जिन पर असंख्यक पक्षी रात्रि विश्राम के लिए डेरा डालते हैं और प्रातः होते-होते लम्बी छलांग भरते हैं।

नदी, सरोवर, ताल, तलैया, कुए, बावड़ी, कुंड, झील, तलाब, सागर, सर सब वृक्ष बिन सूने तथा श्रीहीन लगते हैं। घर-आंगन की शोभा तक वृक्ष-वल्लरी रहे हैं। अनेक गीत, कथा, किस्से, कहावत, मुहावरे वृक्षवाची हैं जिनसे इनकी उपयोगिता, उपस्थिति, उपकार, उपहार जुड़े हैं। बाग-बगीचों से जुड़े अनेक घटना-प्रसंग, आख्यान तथा आनंद विहार ने मनुष्य को मौजी, मस्तजीवी एवं महनीय माननीय बनाया है। पुराणों में, प्राचीन ग्रंथों में वृक्ष वर्णन भरे पड़े हैं।

सृष्टि में सदाबहार वृक्ष :

वृक्षों के ऐसे अनेक दरसाव तथा दस्तावेज भरे पड़े हैं। मैंने अपनी कविता-पुस्तक 'कोई-कोई औरत' में लिखा- 'वृक्ष कटता है जैसे परिवार कटता है। अपनी ऊंगली तो काट कर देखो तुम / कितनों का सहारा होता है वृक्ष / कितनों का घरबार जीवन और संसार होता है वृक्ष! तुम्हें क्या मालूम।'

वह धरती राजस्थान की ही है जहां वृक्ष को बचाने के लिए यहां के वीर और वीरांगनाओं ने अपने प्राणों का उत्सर्ग तक कर दिया। इस अद्वितीय, अनूठी तथा अतुलनीय परंपरा को यहां खड़ाना कहा गया। दूसरे शब्दों में इसे साका नाम से भी जाना गया। 'सिर साटै जै रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' जैसा तो यहां आमजन का कथन ही बना हुआ है।

वृक्ष बचाने को बलिदान :

वृक्ष बचाने के लिए अपने प्राणोत्सर्ग करने की घटनाओं का साक्षी जोधपुर जिला रहा। इसमें नारियों ने अग्रणी रहकर मुख्य भूमिका निभाई। पहली घटना जोधपुर जिले के रामासड़ी गांव की, संवत् 1661 की है। यहां करमा एवं गौरा नामक दो विश्नोई महिलाओं ने खेजड़ी वृक्ष को बचाने स्वेच्छा से अपना बलिदान किया।

दूसरी घटना मेड़ता परगने के पोलावास गांव की संवत् 1700 की चैत्र वदी तीज की है जब राजोद गांव के ठाकुरों द्वारा होली मंगलाने के लिए वृक्ष काटने के विरोध स्वरूप बूचोजी ने तलवार से अपनी गर्दन कटवादी। तीसरी खेजड़ली गांव में भाद्र शुक्ला दशमीं संवत् 1787 में घटी जो विश्वविख्यात है। इसमें खेजड़ी के बचाव में सर्वप्रथम अमृतादेवी ने अपनी बलि दी। उसका अनुसरण करते फिर उस गांव के 363 व्यक्तियों ने प्राणोत्सर्ग किया। एक और घटना भी इसी जोधपुर जिले के तिलासणी गांव की है जहां किरपों भाटी द्वारा वृक्ष काटने के विरोध में खींवजी, मोटा एवं नेतू नैण ने प्राण की बाजी लगादी। ऐसी अनूठी घटनाएं राजस्थान में ही हुई हैं। इस परंपरा को खड़ाना अथवा साका कहा जाता है।

राजस्थान का सर्वाधिक शुष्क जिला जैसलमेर है जहां वर्षा का वार्षिक औसत ही पांच सेंटीमीटर है। यहां दूर-दूर जहां तक दृष्टि जाती है, रेगिस्तान फैला हुआ है। वहां खेतों में जमा पानी रोकने खड़ीन तथा घरों में टांके बनाये जाते हैं। ऐसे शुष्क इलाके में जीवनयापन की मुश्किल कल्पना सहज ही की जा सकती है परन्तु प्रकृति की लीला ही कहिये यहीं पाये जाने वाले ऊंट को राज्य पशु, खेजड़ी को राज्य रूंख, रोहिड़ा को राज्य पुष्प तथा गोडावण को राज्य पक्षी होने का गौरव प्राप्त है।

आदिवासियों में महुए के पेड़ की तरह रेगिस्तान में खेजड़ी वृक्ष कई दृष्टियों से बड़ा उपयोगी है। जाळ पर लगे पीलू नामक फल लू से बचाये रखते हैं। इनके अलावा झरबेरी (बोरड़ी), कंकाड़ी, बबूल, कुमट, कैर जैसे पेड़ ; आक, खींप, सणिया, बूर, नागफणी, थोर जैसी झाड़ियां ; सेवण, धामन, मोथा, तूंबा, गोखरू, सांटी, दूब जैसी घासें वहां के जीव-जगत के लालन-पालन, दुःखदर्द तथा रोजगार सुलभ कराने में अहम भूमिका लिये है।

वृक्ष संरक्षणार्थ ओरण भूमि :

सर्वाधिक उल्लेखनीय पक्ष यह है कि शासन की ओर से प्रजाहितार्थ ऐसी भूमि छोड़ रखी है जिसमें किसी भी तरह के वृक्ष-वनस्पति को काटने अथवा हानि पहुंचाने की सख्त पाबन्दी है। ऐसी भूमि ओरण कहलाती है जो वहां के मन्दिर से जुड़ी होती है।

यहां ऐसे अनेक गांव मिलेंगे जहां माताजी, भैरूजी, भोमियाजी, बायांजी तथा अन्य देवी-देवताओं के नाम से ओरण भूमि आरक्षित-संरक्षित करने का प्रावधान है। इस भूमि से किसी भी पेड़ तथा वनस्पति, फल-फूल तोड़ने को महापाप समझा जाता है। ऐसे ओरण कच्चे पत्थरों, कांटों के पौधों या फिर सूखी कांटेदार झाड़ियों, थूहरों आदि से बाड़ के रूप में चारदीवारी से सुरक्षित कर दिये जाते हैं। इसकी सार संभाल करना पवित्र धार्मिक कर्तव्य तथा पुण्य का भागी होना माना जाता है। अनेक ऐसे वृक्ष मिलेंगे जिनके तनों के ऊपरी छिलके उतार सिन्दूर मालीपन्ना की सहायता से देवी-देवता का प्रतीक चिन्ह बनाकर उनका बचाव किया जाता है।

ऐसी ही ओरण भूमि बीकानेर जिले के देशनोक की विश्वप्रसिद्ध लोकदेवी करणीमाता के बारह कोस, लगभग 36 किलोमीटर की परिक्रमा में नेहड़ीजी के मन्दिर से जुड़ी है। नेहड़ीजी के इस मन्दिर में तो प्रतिदिन ही खेजड़ी वृक्ष की आरती की जाती है। इस क्षेत्र में कभी कोई महामारी तो क्या फ्लेग तक नहीं हुआ। करणीमाता तो चूहोंवाली देवी के नाम से ही जानी जाती है। मन्दिर में प्रवेश करते ही पग-पग पर इतने चूहे मिलेंगे कि संभल-संभल कर दर्शनार्थ जाना पड़ता है फिर फ्लेग का प्रकोप चूहों से ही जुड़ा होने पर भी यहां कभी वह दुर्दिन नहीं देखा गया।

ओरण भूमि दरअसल वनभूमि ही है। विभिन्न अंचलों में वहां मान्य देवी-देवताओं के नाम ऐसी भूमि जगह-जगह मिलेगी। सर्वाधिक रूप में पाबूजी, रामदेवजी, तेजाजी, गोगाजी तथा झरड़ाजी, आईनाथजी, भोमियाजी के नाम से रक्षित ओरण का तो तिनका तक नहीं तोड़ा जाता। इसी प्रकार गायों के चरने की तथा भूमि के रक्षार्थ शहीद हुए लोगों के नाम पर ओरण संरक्षित करने के किस्से भी सुनने को मिलते हैं।

गांवों के चारों और की गोचर भूमि गायों के बैठने सुस्ताने की होती जो खैड़ा कहलाती। कुओं, तालाबों के पास की तांडा तथा पानी आवक का क्षेत्र अगोरो के नाम से जाना जाता। ये स्थल सुरक्षित रहते। इनको कोई गंदा नहीं करता। बाल-बच्चों के खेलने-कूदने तथा बुजुर्गों के बैठने, गपशप लड़ाने के लिए खुला स्थान बाखळ होता जिसे कहीं बंतळ तो कहीं हथाई कहते। वृक्षों की रक्षा के लिए छोटे-बड़े सब जिम्मेदार होते। रियासत काल में राजा, दीवान, सेठ, साहूकार तथा अन्य बड़े भी कोई गल्ती कर देते तो वे भी सजा पाने के समान अधिकारी होते।

डॉ. आईदानसिंह भाटी ने जैसलमेर रियासत में प्रचलित घटना का जिक्र करते लिखा- 'वहां का दीवान था मोहता नथमल। जैसलमेर में दीवान नथमल की हवेली बहुत प्रसिद्ध है। उसने अपने पुत्र के 'पालने के लिए' पेड़ काटने का आदेश दिया। दीवान के कारिंदे भादरिया के ओरण से पेड़ काटकर ले आये। वे उस ओरण से पेड़ काटकर ले गये जिस ओरण से राजा तक पेड़ नहीं काट सकता था। प्रजा की पुकार राजा तक पहुंची। राजा ने दीवान को इस कृत्य के लिए फटकारा और देवी के देवालय में सोने का पेड़ चढ़ाने का आदेश दिया। नथमल ने देवालय पहुंच माफी मांगी और देवालय में सोने का पेड़ चढ़ाया।'

नथमल का एक गीत मैंने मेवाड़ में बचपन में सुना था। सच है हर चीज लिखित नहीं होती। लिखित संविधान होता है जिसकी अवहेलना होती भी देखी गई पर लोकसम्मत अलिखित नियम कायदे संविधान से भी ऊपर होते हैं।

डॉ. भाटी ने उधर प्रचलित एक गीत का भी उल्लेख किया जिसमें नथमल स्वयं नायक बन पेड़ काट रहा है- 'घात्यौ नथमल बोरड़ी रै घाव / बोरड़की करळाई नैनै वाळ ज्यौं / बोरड़की करळाई कायर मोर ज्यौं।' बोरड़ी कुल्हाड़ी का वार करने पर नन्हें बालक जैसा विलाप और मोर की तरह कारूणिक स्वर में वेदनाजनित अश्रुपात करने लगी। ऐसी स्थिति में बोरड़ी नथमल को श्राप देती कहती है- 'तेरी घरवाली मर जाय। पालने में झूला झूलता बच्चा मर जाय। ठाण पर बैठा ऊंट और सांकल से पांव बंधी भैंस मर जाय'- 'मरजौ नथमल थारोड़ी घरनार / पाळणियै में मरज्यौ मोभी डीकरौ / झोकड़ल्यौ में मरज्यौ भूरियौ ऊंट / पैंखड़ल्यां में मरज्यौ भूरोड़ी भैंसड़ी।'

गीत में नथमल शर्मिन्दगी महसूस कर अपने किये पर पछताता है और प्रायश्चित स्वरूप मुंह में घास डाल माफीनामा ले देवालय पहुंच जुर्म कबूल कर देवी से क्षमायाचना करते सोने का पेड़ चढ़ाता है। ऐसा करते ही देवीकृपा से घर में सबकुछ अनुकूल होता सुखशांति छा जाती है।

जैसलमेर के सांवता गांव स्थित देगरायमाता के मन्दिर का ओरण 600 वर्ष से अधिक प्राचीन है जिसे वहां के महारावल वैरसी ने संकल्पबद्ध सानंद पुष्कर की तीर्थयात्रा पूरी कर समर्पित किया था। यह घटना विक्रमी संवत् 1476 वैसाख शुक्ला नवमी की है। साठ हजार बीघा में फैला यह भूभाग सांवता, भोपा, रासला, अचला, भोमसर, मुलाना, कराड़ा, भीखसर आदि गांवों द्वारा रक्षित लगभग 5 हजार ऊंटों तथा 30 हजार भेड़-बकरियों का चरागाह तथा अन्य पशु-पक्षियों का आश्रय स्थल बना हुआ है।

वृक्षों में राम का वास माना गया है। जनमान्यता में बड़ में नौ लाख देवियां, नीम में नारायण, खेजड़ी में गोगा, बरगद में सती, नीम में शीतला, नीमज, गुलर में मावली, बारेड़ी में बद्रीनाथ, साज में भैरव, आम में आमज, दुर्गा, महुआ, बरगद में दंतेश्वरी तथा पीपल में पीपलाज जैसी देवियों का वास माना गया है। उदयपुर के अशोक परिहार ने बताया कि शेषावतार लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ का प्रिय वृक्ष खेजड़ी है।

सच है जब कल्लाजी रूंड लिए शत्रुओं का संहार करते चित्तौड़ से सलूंबर के आगे पहुंचे तब खेजड़ी ने झरकर उनकी प्यास बुझाई थी। वहीं उनका प्राणांत हुआ जहां बसा रूंडेड़ा गांव उनकी यादगार लिये है।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 सितम्बर 2024

सम्पादकीय

इन्द्र को रिझाने

वर्षा नहीं आने पर चारों ओर हाहाकार मच जाता है। हरियाली की बजाय चारों ओर सूखा नजर आता है। वर्तमान फसल और आने वाली फसल, दोनों की चिन्ता करता यहां का जन-जन परेशान हो इन्द्रदेव से बरसने की विनती करता देखने को मिलता है। महिला और बच्चे जब इन्द्रदेव बरसता नहीं है तब कुपित हो नाना प्रकार के टोटके करते पाये जाते हैं।

मेवाड़ प्रदेश में बालिकाएं कवेलू पर गोबर की मेढ़की बना घर-घर घुमाती निम्न गीत गाती सुनाई देती हैं-

अन्नराजा वेगो आव, धोली मकीरा कोठा भराव
डेढ़की ने पाणी पावो, धान चुनरा भंडार भरावो।

यह सुन गृहस्वामी डेढ़की को पानी पिलाती नजर आती है।

बहुत कुछ अरदास करने पर भी जब बरसात नहीं होती है तब महिलाएं कुपित हो गोबर के इन्द्र-इन्द्राणी को अपने घर के मुख्य द्वार पर उल्टे बना देती हैं। उस गली-रास्ते पर गुजरते हुए हर व्यक्ति उन इन्द्र-इन्द्राणी को देखकर कई तरह की प्रतिकूल भावनायें व्यक्त करते हैं।

मेवाड़ प्रदेश में इन्द्र पर कुपित हुए ऐसे टोटके बहुत प्रचलित है। अन्य अंचलों में भी इन्द्र-इन्द्राणी के प्रति ऐसी कुभावनाएं व्यक्त की जाती हैं। उदाहरणार्थ-

बादली बरसे क्यूं नी ए
बीजली चमके क्यूंनी ए
म्हारे भवर सारे हवा महल में
चम्पो सूखे ए।

मेवाड़ क्षेत्र से वागड़ प्रदेश में महिलाएं अपने हाथों में लट्ठ और तलवारें लेकर पुरुष वेश में धाड़ा डालने निकलती हैं। इस सम्बन्ध में प्रकाशित यह खबर उल्लेखनीय है-

बांसवाड़ा के टामटिया गांव में सुखा पड़ने पर महिलाएं 'धाड़' 100 साल से चली आ रही परम्परा का निर्वाह करते हुए पुरुष वेश में हथियारों से लैस होकर धाड़ा डालने जैसे प्रथा का निर्वाह करती है। आनन्दपुरी पंचायत समिति के टामटिया गांव में अच्छी बारिश की कामना को लेकर महिलाएं पुरुषों की वेशभूषा धोती-कुर्ता, सिर पर पगड़ी पहनकर और हाथों में लट्ठ व तलवार लेकर धाड़ पर निकली। धाड़ का मतलब डकैती डालना होता है। जैसे ही महिलाएं टामटिया गांव से पांच किलोमीटर दूर छाजा तक पहुंची तो अचानक मौसम पलटा और बादल गरजने के साथ मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। धाड़ पर निकली महिलाएं बारिश में भीगती नजर आईं। हाथों में धारिये, तलवारें, लट्ठ, सिर पर पगड़ी, माथे पर तिलक, कलाई में कड़े और पैरों में जूतियां पहनी महिलाओं को देखकर एकबार तो वहां से गुजर रहे वाहन चालक, राहगीर और ग्रामीण डर गये, लेकिन इन महिलाओं की मंशा किसी को डराने की नहीं थी बल्कि सूखे के संकट का सामना कर रहे इस इलाके में अच्छी बारिश की कामना थी।

अच्छी बारिश की कामना को लेकर भगवान इन्द्रदेव को रिझाने की 100 साल से ज्यादा प्राचीन यह अनूठी परम्परा है। इसे स्थानीय भाषा में धाड़ कहते हैं। धाड़ निकालती महिलाओं के जुलूस के सामने पुरुष नहीं आते हैं। पुरुषों का सामने आना अपशकुन माना जाता है।

- दैनिक भास्कर, 24 अगस्त 2024

कलम के सिपाही कभी तटस्थ नहीं होते

-वेद व्यास-

कभी हिंदी के मूर्धन्य कवि गजानन माधव मुक्तिबोध के संदर्भ में सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने कहा था कि मुक्तिबोध सक्रिय बेईमान और निष्क्रिय ईमानदार लोगों के गठबंधन के सताए हुए हैं। आज मुक्तिबोध और परसाई दोनों ही इस दुनिया में नहीं हैं और 21वीं शताब्दी के भूमंडलीकरण के मुक्त व्यापार के दौर में हमारा साहित्य जगत इसी अपवित्र महागठबंधन से पीड़ित है। बदलते भारत की किसी भी समस्या, चुनौती और प्रश्न पर लेखक को मौन देखकर, आज भी मुझे लगता है कि लेखक समय से मुठभेड़ करने की जगह समझौते और समर्पण अधिक कर रहा है। एक आत्ममुग्ध नायिका की तरह। इसीलिए वह न तेरा है न मेरा है और साहित्य, समाज और समय का है। हिंदी जगत में तीन-तेरह की ये बीमारी 2014 के बाद बहुत दयनीयता से फलफूल रही है और सभी तरफ सक्रिय बेईमान और निष्क्रिय ईमानदार अपने-अपने मोर्चों पर मारधाड़ से ही प्रचार और सदगति का मोक्ष और मुनाफा तलाश कर रहे हैं।

बहरहाल! साहित्य के बाजार में लेखक और संस्कृति कर्मी अब इसलिए अप्रासंगिक हो गए हैं कि उन्होंने अपना दीन ईमान छोड़ दिया है और बौद्धिक ऐय्याशी का तानाबाना पहन लिया है ताकि गति से पहले सुरक्षा बनी रहे। ये भी इतिहास है कि पहली बार देश की राजनीति और सामाजिक- आर्थिक परिवर्तन के संग्राम में (1936) प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई थी तब कथाकार प्रेमचंद ने साहित्य के उद्देश्य को लेकर कहा था कि साहित्य तो राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है और कोई मनोरंजन तथा महफिल सजाने का कारोबार नहीं है।

तब से लेकर अब तक वामपंथी और मार्क्सवादी विचारधारा के ऐसे सभी संगठन (प्रगतिशील लेखक संघ, जनवादी लेखक संघ, सांस्कृतिक मंच, आदि) भारत की सभी भाषायी चेतना में वामपंथी पार्टियों के अत्यधिक हस्तक्षेप और अंतर्विरोधों से विकलांग होकर बिखर चुके हैं और व्यक्तिवाद तथा बाजारवादी व्यवस्था की बहती गंगा में डुबकी लगा रहे हैं। विचारधारा के मरने की घोषणाएं कर दी गई हैं और लेखक ने सभी विकल्प खुले हैं का अवसरवादी रास्ता पकड़ लिया है।

मुझे लगता है कि भारत में साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, स्वतंत्रता और सत्य के प्रयोगों पर अंधा युग मंडरा रहा है क्योंकि हम चुप हैं, डरे हुए हैं और नफा-नुकसान के बाजार तथा जनविरोधी विचार में फंसे हैं और साहित्य, समाज और समय को धोखा दे रहे हैं।

कांग्रेस के लिए 1977 में संसद कवि श्रीकांत वर्मा और नौकरशाह कवि गिरिजा कुमार माथुर ने इंदिरा गांधी के आपातकाल में कभी राष्ट्रीय लेखक संगठन बनाया था लेकिन तब वामपंथी लेखक संघों ने आपातकाल के आगे हथियार नहीं डाले थे और कांग्रेस समर्थक श्रीकांत वर्मा का यह सपना टूट गया था। मैं खुद भी इसी चक्कर में आपातकाल के तहत आकाशवाणी की नौकरी खो चुका हूं अत: ये कहना चाहता हूं कि 1990 में सोवियत संघ के विभाजन और समाजवाद के धराशाही होने के बाद भारत में जो भूमंडलीकरण का मुक्त बाजार शुरू हुआ तब से हमारे यहां साहित्य में विघटन, पलायन और सक्रिय बेईमानी और निष्क्रिय ईमानदारी का गठबंधन बड़ा है तथा धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और समाजवादी सपनों का संविधान कमजोर होना शुरू हुआ है जो आज खुल्ला खेल फर्रुखाबादी बन गया है।

आश्चर्य तो यह है कि राष्ट्रीय स्वयं संघ, जन संघ और भाजपा प्रणीत तथाकथित अखिल भारतीय साहित्य परिषद आज भी टूटी और बिखरी नहीं है अपितु 2014 के बाद तो साहित्य, संस्कृति, कला, संगीत, शिक्षा, विज्ञान और सूचना प्रसारण एवं इतिहास के क्षेत्र में खुलकर सांस्कृतिक हिंदू राष्ट्रवाद का बिगुल बजा रहा है और नया भारत भी बना रही है।

सच ये है कि दक्षिण पंथ 1925 से लगातार एकजुट रहा है लेकिन हम और हमारी लोकतांत्रिक समाजवादी और धर्मनिरपेक्षता साहित्य तथा सांस्कृतिक चेतना का आंदोलन आपसी फूट और व्यक्तिवादी अहंकारों से निरंतर टूटा है। ऐसे कठिन दौर में मेरा अनुभव और अनुरोध कहता है कि कल इस नए भारत का क्या होगा? जहां आज संसद से सड़क तक कोई विपक्ष नहीं है, जनपथ से राजपथ तक कोई हस्तक्षेप नहीं है और साहित्य, संस्कृति और शिक्षा के परिसर में कोई रविंद्रनाथ, सुब्रह्मण्यम भारती, प्रेमचंद, कैफी आजमी, महाश्वेता देवी, महादेवी, मीरा और मुक्तिबोध अथवा परसाई नहीं है। मुझे लगता है कि भारत में साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, स्वतंत्रता और सत्य के प्रयोगों पर अंधा युग मंडरा रहा है क्योंकि हम चुप हैं, डरे हुए हैं और नफा-नुकसान के बाजार तथा जनविरोधी विचार में फंसे हैं और साहित्य, समाज और समय को धोखा दे रहे हैं। क्योंकि हजारों साल की गुलामी ने हमारी मनुष्य होने की सच्चाई को प्रत्येक सत्ता-व्यवस्था ने दलित, आदिवासी, महिला और अल्पसंख्यक बनाकर लड़ाया- भड़ाया है।

शब्द की विश्वसनीयता को कुचला है और आज बाजार में बेचा है। अब यहां तस्लीमा नसरीन और गणेश लाल व्यास उस्ताद की चेतना और परंपरा कहां है जो गोविंद गुरु तथा कबीर की निर्गुण धारा को पुन: प्रवाहित कर सके? जब हमने भारत-पाक विभाजन भी देखा है, हम आपातकाल में भी संगठित थे और हम सोमनाथ से अयोध्या की रथयात्रा में भी नहीं थे तो फिर हम चुप और तमाशबीन क्यों हैं? कौन हमें लड़ा रहा है और कौन हमें सरकार तथा बाजार की कठपुतली बना रहा है?

लहू से लिखी कुर्बानी

दोहराती हूं सुनो लहू से लिखी कुर्बानी,
जिसके कारण धूल भी चंदन है राजस्थानी।
9 मई सन् 1540 का सूरज स्वर्णिम
रश्मियां बिखेर रहा था,
दिल्ली में सरताज का सिंहासन डोल रहा था।
सिसोदिया राजवंश में
मुगलों का काल जन्मा था,
मेवाड़ मुकुटमणी महाराणा प्रताप जिनका नाम था।
अकबर का दुर्ग में संदेसा आया,
सुन जिसको मेवाड़ी शौर्य पर अंधियारा छाया।
'हमारी अधीनता स्वीकार कर लो,
सियासत हमें समर्पित कर दो,
शाही फरमान न माना तो बहुत पछताओगे,
मेवाड़ी मुकुट की शान न बचा पाओगे,
राणा का शीश कटा पाओगे।'
सुन फरमां बिजली की तरह
क्षितिज तक फैल गया अंबर में,
क्रोध से लरजा राणा का
शौर्य ज्वाला बन दौड़ा रक्तधार में।
'गर धरा की आन गई घाव नहीं भरने का,
उठो वीरों ! समय आ गया
कट मर स्वाभिमान बचाने का ।
एकलिंग की शपथ!
महाप्रलय के घोर प्रभंजन भी
अब न रोक पाएंगे,
परचम सिसोदिया राजवंश का
ही फहराएंगे।'
बजा कूच का शंख,
हर-हर महादेव की ध्वनि लहराई,
सज गए हाथी-घोड़े,
सैनिकों ने जय-जयकार लगाई।
शब्द-शब्द राणा का था तूफानी,

अकबर देखेगा अब केसरिया तलवारों का पानी।
जिसके कारण धूल भी चंदन है राजस्थानी,
दोहराती हूं सुनो लहू से लिखी कुर्बानी।
हल्दीघाटी की माटी हुई सुभट अभिमानी,
लाडला आ गया समर करने बन गई क्षत्राणी।
मानसिंह के लाखों सैनिक राणा के चंद सेनानी,
छांट-छांट शीश हलाल कर रहे
बन दरिया तूफानी।
बज चले नभ में बरछे,
भाले, शर, तरकस, तलवार,
रक्त अरी का पीने को
मातृभूमि रही थी जीभ पसार।
चौकड़ी भर-भर चेतक
शत्रु का मस्तक फोड़ा था,
तन पर उसके जो राणा का कोड़ा था।
महारूद्र सा गरजा करने को
मातृभूमि का सतित्व अभिमानी,
लाल रंग से स्नान कर
बन गया शूरवीर अमर-सेनानी।
जिसके कारण धूल भी चंदन है राजस्थानी,
दोहराती हूं सुनो लहू से लिखी कुर्बानी।
अकबर मचला था पानी में आग लगा देने को,
पर पानी प्यासा बैठा था ज्वाला पी लेने को।
धम्मक-धम्मक धमक गया
हाथी रामप्रसाद हिमगिरि बनने को,
शंकर का डमरु बन तांडव
मचाया मेवाड़ी मान बचाने को।
सूंड में पकड़ तलवार
अरी पर कर रहा वार-पे-वार,
मुगलों के अनेकों हाथी दिए पसार।
भीषण रण से दहली दिल्ली की दीवारें,
शत्रु ने रच डाली चक्रव्यूह की लकीरें।
फंस गया वीर सेनानी हुसैन खां का बंदी बना,
यह देख मातृभूमि का सीना चीत्कार उठा!
'अरे कायरों! नीच बांगडों,
छल से क्या रण करते हो?
किस बूते जवां मर्द बनने का दम भरते हो?'
मानो मां पर अंबर ने अग्निशिरा छोड़ा था,
भेंट अनूठी देख अकबर का सीना हुआ चौड़ा था।
अश्रुधार में नहाया हाथी
पुकारा गया जब पीरप्रसाद,
स्वामी से बिछुड छा गया घोर अवसाद।
अकबर के छप्पन भोग को
मुंह तक ना लगाया था,
त्याग अन्न-जल शहादत की
लिख गया नई अमर-गाथा था।
देख यह अकबर का अंतस मन भर आया,
'जिसके हाथी को मैं ना झुका पाया,
उसके स्वामी को क्या झुकाऊंगा?'
कह अकबर भी फूट-फूट कर रोया था।
एक-एक कर कुर्बान हो गए
सभी मेवाड़ी पशु सेनानी,
राणा पर लेकिन रंचक आंच न आने पाई।
चेतक-हाथी की शहादत पर
भारत मां भी रोई थी,
उसने अपनी दो प्यारी
ज्वलंत मणियां खोई थी।
धन्य-धरा ,धन्य-मेवाड़, धन्य-बलिदानी!
बस यही है
स्वामीभक्ति, शौर्य, पराक्रम, देशप्रेम
की सच्ची कहानी
जिसके कारण धूल भी चंदन है राजस्थानी,
दोहराती हूं सुनो लहू से लिखी कुर्बानी।

- शिखा अग्रवाल

एचडीएफसी बैंक व जेएलआर इंडिया में एमओयू

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक और जेएलआर इंडिया ने ऑटो फाइनेंसिंग के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। बैंक अब जेएलआर का पसंदीदा वाहन फाइनेंसर होगा। इससे उपभोक्ताओं को विशेष फाइनेंसिंग योजनाएं,विशेष ऑफर/इवेंट और प्राथमिकता वाली सेवाएं/ संलग्नता जैसे कई लाभ मिलेंगे।

एचडीएफसी बैंक के रिटेल एसेट्स के ग्रुप हेड अरविंद वोहरा ने कहा कि हम जेएलआर जैसे प्रतिष्ठित और महत्वाकांक्षी ऑटोमोटिव ब्रांड के साथ इस साझेदारी को लेकर उत्साहित हैं। बैंक ग्राहकों को सहज अनुभव प्रदान करने के लिए अपनी मजबूत निष्पादन क्षमताओं का लाभ उठाएगा। जेएलआर इंडिया के प्रबंध निदेशक राजन अंबा ने कहा कि हमारे डीलर पार्टनर हमारे व्यवसाय के अभिन्न अंग हैं, और हमें उनके व्यवसाय को आसान बनाने में मदद करने के लिए समाधान विकसित करने में सक्षम होने पर प्रसन्नता हो रही है। अखिलेश कुमार रॉय, बिज़नेस हेड, ऑटो लोन्स एंड इन्वेंटरी फाइनेंस एचडीएफसी बैंक ने कहा कि दोनों संगठनों के एक साथ आने से कार खरीदने का अनुभव बेहतर होगा। ग्राहक अब कई मूर्त और अमूर्त लाभों का आनंद लेंगे।

मेघ गीत कजरी की व्यथा कथा

- अश्विनीकुमार आलोक -

अलग-अलग महीनों में अलग-अलग मौसम और प्राकृतिक परिवेश पाने का सौभाग्य मनुष्य को प्राप्त है। इससे जीवन सुरम्य बनता है। अपने सौभाग्य और आह्लाद की अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य ने लोककलाओं को माध्यम बनाया। इन लोककलाओं में 'लोकगीत' प्राय: सर्वाधिक प्रचलित और प्रसिद्ध अभिव्यक्ति-विधा है। इस विधा के माध्यम से अनुभवों और कामनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। प्रकृति के प्रति धन्यवाद-ज्ञापन भी लोकगीतों का वर्ण्य रहा है। ईश स्तुति और ईश्वर के प्रति आस्था का प्रवाह लोकगीतों की आरंभिक अवस्था है। इन्हीं लोकगीतों में प्रमुख है 'कजरी'। यह समूचे हिन्दी प्रदेशों का वर्षाकालीन लोकगीत है। यद्यपि वर्षा के समय में 'चौमासा', 'बारहमासा' और 'झूला गीत' नाम के दूसरे लोकगीत भी प्रचलित हैं। इनका प्रचलन बिहार के पश्चिमी और उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों में है।

'झूला गीतों' में राधा कृष्ण के झूला , सावन की फुहार और शिव के जलाभिषेक को वर्ण्य बनाया गया है परंतु कजरी में वर्षा ऋतु , राधा कृष्ण के प्रेम और विरह का वर्णन मिलता है कजरी के भी कई प्रकार बताए गए हैं। उनकी उत्पतियों के संबंध में भी अनेक प्रकार की मान्यताएं हैं।

मान्यता है कि कजरी का उद्भव कंतित देश से हुआ। कंतित के राजा की बेटी 'कजरी' और दामाद का संबंध किसी कारणवश मधुर नहीं रह पाया था। पति-पत्नी में विभेद हो गया था। कंतित के राजा की पुत्री अपने पति को रो-रो कर याद करती थी। वर्षा के समय उसे अपने पति की अधिक याद आती थी। वर्ष के मदमत्त में वह अपने मन और शरीर की व्यथा अपनी सखियों और भौजाइयों के सामने व्यक्त करती थी। विरह व्यथा व्यक्त करने के करुण क्रंदन ने लोकगीतों का रूप धारण किया। इसलिए इस प्रकार के लोकगीतों को 'कजरी' कहा गया। 'कजरी' नामकरण के संबंध में एक मान्यता यह है कि यह बादल राग अर्थात मेघगीत है। यह मेघ बादल और शीतल मनभावन हवा की कोई अभिव्यक्ति है बादल का रंग 'कज्जलं' अर्थात 'काजल' के रंग का होता है । इसलिए इसे कजरी कहा गया । लेकिन कंतित देश की राजकुमारी का विरह गीत होने के कारण इसे 'कजरी' माना गया , यह मत सर्वाधिक प्रचलित है । राजकुमारी द्वारा गाये गये विरह गीत को इसी कारण कजरी कहा गया।

इन दिनों का जो पूर्वी उत्तरप्रदेश है, वही कभी कंतित था। आज का मिर्जापुर उन दिनों इसकी राजधानी हुआ करता था। इसे मिथ्यावासुदेव की राजधानी कहा जाता है। अब यह नगर अपने पुराने सौंदर्य को खो चुका है। मिर्जापुर में अवस्थित विंध्याचल शक्तिपीठ की कुछ ही दूरी पर इस प्रांत की राजधानी हुआ करती थी। आज हजरत ख्वाजा इस्माइल चिश्ती की दरगाह है, जिसे कंतित शरीफ कहते हैं। ख्वाजा के सालाना उर्स के अवसर पर मेला लगता है।

मेघ गीत कजरी गाते कलाकार

'कजरी' में सिर्फ प्रियतम से बिछुड़ने की पीड़ा और वर्षा ऋतु में उसकी विदग्धकारी स्मृति का ही वर्णन नहीं मिलता, प्रिय से संयोग, श्रृंगार और प्रेम के उद्धरणों को भी लोकगायक बहुत तन्मयता के साथ गाते हैं। संयोग के बाद ही वियोग होता है। इसलिए वियोग का चित्रण करने के लिए संयोग की स्मृतियों को विस्मृत नहीं किया जा सकता, लोकगायक इसका स्वाभाविक ध्यान रखते हैं। मिर्जापुर की देवी विंध्यवासिनी का नाम भी 'कजली' है। अनेक लोकगायकों ने उनके स्तुति गीतों में इस नाम की महिमा का वर्णन किया है। इस प्रकार यह लोकगीत भक्ति गीत के रूप में भी समादृत हुआ है। कुछ लोकविदों का मानना है कि 'कजरी देवी' के स्मरण स्वरूप गाये जाने के कारण इसका 'कजरी' नाम हुआ।

बलदेव उपाध्याय का मानना है कि 'कजरी' पारंपरिक 'लावणी' का ही रूप है। इसे एक पारंपरिक पर्व से जोड़कर भी देखा-समझा गया है। भादो मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि को 'कज्जली पर्व' का आयोजन होता है। इसे स्त्रियां मनाती हैं। स्त्रियां नये वस्त्र और आभूषण पहन कर रात भर जागती हैं,अपने भाइयों की कुशलता के लिए जई बांधती हैं। इस व्रत का एक पवित्र पक्ष गीत होता है। इस गीत को 'कजरी' कहते हैं। मिर्जापुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में एक कहावत बहुत प्रसिद्ध है -'लीला रामनगर की भारी कजरी मिर्जापुर सरनाम।'

चुनार (मिर्जापुर) के रहने वाले वरिष्ठ साहित्यकार डॉ रामदुलार सिंह पराया ने बताया कि काशी नरेश की जाने वाली रामलीला बहुत प्रसिद्ध है, तो मिर्जापुर के सामान्य लोगों द्वारा शुरु किये गये 'कजरी महोत्सव' का नाम उससे कम नहीं। कजरी को कहरवा ताल में निबद्ध कर रात भर गाया जाता है। कजरी महोत्सव तीज पर्व के अवसर पर आयोजित होता है। मिर्जापुर की कजरियों को सुनने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं।वे रात भर जागकर लोकगायन के स्वाभाविक माधुर्य का रसास्वादन करते हैं। मिर्जापुर और काशी के बीच की दूरी अधिक नहीं है।काशी अर्थात वाराणसी में भी कजरी गायन की अनूठी परंपरा है। काशी में स्त्रियां कजरी को मनोयोग से कंठ देती हैं। यहां विरहा शैली में कजरी के दंगलों अर्थात् प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। इनमें स्त्रियों के अतिरिक्त पुरुष भी भाग लेते हैं। कजरी गाने वाली स्त्रियों को 'गौनहारिन' कहा गया है। ये स्त्रियां कजरी के दंगलों में अपने पुरुष अथवा स्त्री प्रतिद्वंद्वियों से गा गाकर सवाल जवाब करती हैं।कजरी गाने वाले बनारसी गायकों में मार्कंडेय, खुदाबख्श, श्यामलाल, भैरो, पटलू रहमान और सुनीरिया के नाम आज भी जीवित हैं। वहीं, मिर्जापुर के कजरी गायक उस्तादों वफ्फत,सूरा,हरिराम,मोती और लक्ष्मण के नाम आदर के साथ लिये जाते हैं।

'झूला गीतों' में भी कजरी का उपयोग होता है। उत्तरप्रदेश और बिहार के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रदेशों में झूला गीत प्रसिद्ध हैं। सावन में बड़े पेड़ों की डालियों में एक साथ अनेक झूले लगाये जाते हैं। कम उम्र की बालिकाएं एवं युवतियां इन झूलों पर झूलती हैं और वर्षा ऋतु के गीत गाती हैं, इन गीतों को 'झूला गीत' कहते हैं। स्त्री कंठ में सामूहिक झूला गीत बहुत मनोहारी वातावरण बना देते हैं। इन झूला गीतों में बारहों मास के स्वरूपों और कामिनी की अंतर्व्यथा के साथ साथ, ग्रामीण जनजीवन, प्रकृति का साहचर्य और देवी देवताओं की लीलाओं के वर्णन मिलते हैं। जिन गीतों में बारहों मास की चर्चा होती है, उन्हें 'बारहमासा' कहा गया है। सिर्फ वर्षा ऋतु के चार माह को विशेषकर उद्धृत किये जाने के लिए अलग से 'चौमासा' नामक लोकगीत निर्धारित है। 'बारहमासा' और 'चौमासा' की धुन एक ही है। यहां पर विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि झूला गीतों और बारहमासा-चौमासा के बीच कजरी का विशेष महत्व है। स्त्रियां कजरी को बहुत मनोयोग से कंठ देती हैं। सावन-भादो में हर दिन घर के काम निबटाने के बाद स्वाभाविक रूप से कजरी के स्वर स्त्रियों के कंठों से नि:सृत हो जाते हैं। जन्माष्टमी के अवसर पर झूले लगाये जाते हैं। इन झूलों से झूला गीत गूंजते हैं, तो उनमें कजरी अपना प्रमुख और प्रभावशाली स्थान रखती है। अनेक प्रदेशों में कजरी ने झूला गीतों के रूप में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। बिहार के अनेक नदी तटीय क्षेत्रों में सावन-भादो की अंधेरी रातों में नौका विहार की परंपरा रही है। जलस्तर कम होने पर स्त्री पुरुष नौका विहार करते हैं। इसमें एक विशेष गीत 'झिंझरी' गाया जाता है। ये झिंझरी कहीं से भी कजरी से अलग नहीं है।

जादू और टोने-टोटके

-प्रो. श्रीचन्द जैन -

जादू-टोनों के प्रति लोकजीवन में अधिक आस्था है। जनता इसके सम्बन्ध में जो धारणा बना चुकी है, उसे किसी प्रकार से कमजोर बनाने के लिए वह तैयार नहीं है। माना कि यह एक अन्ध विश्वास है और इसका अस्तित्व बालु की भींत के समान क्षणिक है फिर भी जनमानस इसके प्रति सहज आकर्षित है और समय-समय पर वह ऐसे अमानवीय कृत्य कर बैठता है कि उसे बार-बार पश्चाताप करना पड़ता है। सृष्टि के आदि युग से जादू-टोना अंकुरित हुआ तथा शनै: शनै: यह पल्लवित पुष्पित और फलित होकर अपने प्रभाव को व्यापक बना चुका है।

ग्रामवासियों एवं वनवासियों के मानस में टोने-टोटके शर्बत में शर्करा की भाँति समाहित हैं। सांस्कृतिक चेतना के ये प्रधान अंग हैं क्योंकि लोकसंस्कृति को जीवित रखने में टोने-टोटके विशेष सहायक बने हैं। ऐसी सैकड़ों लोककथाएँ- लोकगाथ एवं लोकगीत हमें उपलब्ध होते हैं जिनमें इनका उल्लेख हुआ है। उड़ती लाश, मुरदा बोल उठा, खोपड़ी की आवाज, लाल आकाश से गिरते तारे, सूखा झाड़ आदि ऐसी ही लोक कहानियाँ हैं जिनमें टोनों-टोटकों के अद्‌भुत प्रभाव प्रदर्शित किए गए हैं। इसी प्रकार बहादुर की तलवार, धनसिंह की कसौटी, गंगा में डूबती नैया आदि लोकगाथाओं में टोटकों में अनोखे करिश्मों की चर्चा है।

लोकसंस्कृति का निकट से अध्ययन करने वालों का टोने-टोटके शब्दों से सहज की परिचय हो जाना अनिवार्य है क्योंकि टोने और टोटकों की जड़ें लोकजीवन में इतनी गहरी बैठी हुई हैं कि उन्हें उससे अलग कर सकना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। मुख्यत: टोटके जन्म से ले लेकर मरण तक किसी-न-किसी रूप में व्यक्ति की मंगल कामना के हेतु किये जाते हैं। उसी प्रकार टोने भी किसी को हानि पहुँचाने अथवा किसी कठिन कार्य की इच्छित-सिद्धि के लिए काम में लाये जाते हैं। इन दोनों शब्दों की उत्पत्ति का एकदम ठीक-ठीक अन्दाज लगाना जरा कठिन है, फिर भी मोटे तौर पर हमें दोनों शब्दों का प्रचलन वेदों के अप्रचार और पुराणों की प्रतिष्ठा की कई शताब्दी पश्चात तंत्र युग में ही मिलता है ।

अथर्ववेद में वर्णित मंत्र शास्त्र, जिसमें मांत्रिक तथा केवल वैधानिक दोनों ही प्रकार के तंत्र हैं धीरे-धीरे भूला जाने लगा और मंत्र शास्त्र के नाम पर जो कुछ पुराण तथा परवर्ती ग्रन्थों में उपलब्ध था उसे ही एक मात्र शास्त्रीय मानकर मंत्र शास्त्र के नाम पर अनेक लाभदायक तथा हानिप्रद कालान्तर में इन्हीं प्रयोगों का उनकी उपयोगिता के आधार पर नाम पड़ा ।

कुछ विद्वानों का मत है कि टोने या टोटके कोई अलग शब्द नहीं हैं बल्कि एक दूसरे के पर्याय हैं पर यह मत भी एकदम ठीक प्रतीत नहीं होता। अध्ययन करने पर पता चलता है कि टोटके मुख्यत: मंगल सूचक, अनिष्ट निवारक, रोग निवारक या उसके बचाव के लिए किये जाते हैं। इसलिए टोटके स्त्रियों में बहुत लोकप्रिय हैं और अब तो टोटके केवल स्त्री वर्ग द्वारा बोला जाने वाला शब्द ही है।

इसके विपरीत टोना अमंगल सूचक, रोग उत्पादक, मारण, उच्चाटन, अनुचित आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण आदि के लिए किया जाता है। व्यक्ति विशेष की मनोकामना पूरी होती है तो किसी को हानि भी पहुंचती है। और प्रयोग में निश्चय ही किसी निरीह पशु के जीव का वध भी होता है। इसीलिए टोने केवल सयाने, सिद्ध, ओझा, अघौरी शैव्य, शाक्त तथा अन्य वाममार्गियों की विरासत में रह गए। जन-साधारण इन व्यक्तियों को भय अथवा घृणा की दृष्टि से देखता है।

टोटके अथवा टोनों में विश्वास किया जाय या न किया जाय यह दूसरी बात है पर यह सत्य है कि उनकी अमिट छाया हमारे लोकजीवन पर आज भी है । टोटके और टोनों में एक मुख्य अन्तर यह भी है कि टोटकों में किसी शास्त्रीय पद्धति की जरूरत नहीं होती और न उनमें किसी मंत्र की आवश्यकता है किन्तु टोने में निश्चय ही पूरी-पूरी शास्त्रीय पद्धति काम में लायी जाती है। मंत्र उच्चार से लेकर अनुष्ठान और बलिदान तक सब कुछ। इससे यह सिद्ध होता है कि टोना शास्त्रीय अनुष्ठान है तथा टोटका एकदम लौकिक।

जैन आगमों में भी जादू-टोना और अन्धविश्वासों का उल्लेख मिलता है। डॉ. जगदीशचन्द्र जैन के कथनानुसार-' आदिकाल से जादू-टोना और अन्धविश्वास प्राचीन भारत के सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण रहे हैं। कितने ही मंत्र, मोहिनी विद्या, जादू, टोटका आदि का जैन सूत्रों में उल्लेख आता है जिनके प्रयोग से रोगी चंगे हो जाते हैं, भूत-प्रेत भाग जाते हैं, शत्रु हथियार डाल देते हैं, प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं, स्त्रियों का भाग्य उदय हो जाता है, युद्ध में विजय लक्ष्मी प्राप्त होती और गुप्त धन मिल जाता है।

नजर लगना शिशु के लिए अहितकर माना गया है। फलत: इस कुदृष्टि के कुप्रभाव को दूर करने के लिए स्त्रियाँ एक प्रयोग (राई, नमक 7, खड़ी लाल मिर्च, आदि) करती है जो 'टोटका' कहा जाता है। निम्नलिखित लोकगीत में इसी टोटका का संकेत है—

भुलादो माई स्याम परै पलना ।
जो मेरे ललना को पलना
झुलाबै, देऊ जड़ाऊ ककना।
काऊ गुजरिया की नजर लगी है,
चौक परे ललना।
राई नौन उतारो जसोदा,
खुसी भये ललना।
भुलादो माई स्याम परै पलना।

आकर्षक सुन्दरता को कुदृष्टि से बचाने के हेतु डिठौना (ललाट के किसी एक कोने में काजल की मोटी रेखा चिन्हित करना) लगाया जाता है जिसे स्त्रियों की मान्यता के अनुसार टोटका कहा गया है।

बाजार / समाचार

पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा को मिली एनएबीएच मान्यता

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा को एनएबीएच पांचवें संस्करण की मान्यता मिली है। (एनएबीएच) नेशनल एक्रीडिटेशन बोर्ड फॉर हॉस्पिटल एंड हेल्थ केयर प्रोवाइड एक राष्ट्रीय स्तर की सरकारी संस्था है जो हॉस्पिटल को चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता परख कर मान्यता प्रदान करती है।

पिम्स के चैयरमेन आशीष अग्रवाल एवं सीईओ श्रीमती शीतल अग्रवाल ने बताया कि एनएबीएच की मान्यता प्राप्त करने के लिए हॉस्पिटल में कठिन परीक्षा एवं मशीन उपकरण और चिकित्सा में सहायक सभी संसाधनों की उपलब्धता व गुणवत्ता होना आवश्यक है। हॉस्पिटल ने चिकित्सा सेवाओं के अच्छे मानकों पर कार्य कर यह उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने बताया कि एक्रिडिटेशन का सीधा फायदा आदिवासी बहुल इस संभाग सहित पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश से हर साल आने वाले लाखों मरीजों को होगा। उन्हें यहां विशेषज्ञ चिकित्सकों, अत्याधुनिक और प्रामाणिक उपकरणों से जांच-उपचार के साथ हर वह बेहतरीन चिकित्सा सेवा मिलेगी। एनएबीएच मान्यता का स्तर कायम रखने के लिए ट्रेंड टेक्नीशियन, सर्टिफाइड मशीनों के जरिए मरीजों की जांच, ओटी, आईसीयू, इमरजेंसी ड्रग, विशेषज्ञ चिकित्सकों से ही इलाज आदि की व्यवस्थाएं रखी जायेगी।

उन्होंने बताया कि यह प्रतिष्ठित प्रमाणन स्वास्थ्य सेवा वितरण में गुणवत्ता, रोगी सुरक्षा और उत्कृष्टता के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि गत दिनों एनएबीएच टीम ने विभिन्न स्वास्थ्य मानकों पर पिम्स हॉस्पिटल का निरीक्षण किया जिसमें उन्होंने पाया कि बदलते स्वास्थ्य देखभाल परिवेश में अस्पताल रोगी सुरक्षा और सेवाओं की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हैं।

कानोड़ मित्र मंडल की पिकनिक एवं सम्मान समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। कानोड़ मित्र मंडल उदयपुर की वर्षाकालीन पिकनिक काया गाँव के पास आराम बाग में करीब 350 सदस्यों की उपस्थिति में हुई। सभी सदस्यों ने आपसी परिचय, गेम्स एवं जलक्रीड़ा के साथ प्राकृतिक वातावरण का लुत्फ लिया। दोपहर में वरिष्ठजन सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता कानोड़ के वरिष्ठ एडवोकेट ख्यालीलाल बाबेल ने की। मुख्य अतिथि पेसिफिक विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक एवं कानोड़ जवाहर विद्यापीठ के संचालक नरेन्द्र धींग ने रोजगारोन्मुखी शिक्षा के बारे में जानकारी साझा की। विशिष्ट

अतिथि आकाशवाणी, उदयपुर के निदेशक रविन्द्र डूंगरवाल थे।

मुख्य संरक्षक पूर्व जिला न्यायाधीश हिमांशुराय नागोरी के दिशा निर्देशन में सुपर सीनियर सिटीजन, वरिष्ठजन सम्मान, संरक्षक सम्मान, भामाशाह सम्मान एवं प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। कानोड़ मित्र मंडल के अध्यक्ष दिलीपकुमार भानावत ने सभी को एक साथ मिलकर कार्य करने एवं सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रम में अपनी सहभागिता निभाने के लिए पुरजोर सहमति प्रकट कर इस दिशा में आगे बढ़ने का आश्वासन दिया। संचालन डॉ. स्वीटी भानावत एवं महामंत्री संजय अलावत द्वारा किया गया।

हाई-टेक पाइप्स को मिला 105 करोड़ रुपये का ऑर्डर

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी स्टील ट्यूब और पाइप निर्माताओं में से एक, हाई-टेक पाइप्स लि. ने रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर की ईआरडब्ल्यू स्टील पाइप की आपूर्ति के लिए 105 करोड़ रुपये (जीएसटी सहित) के ऑर्डर प्राप्त किये हैं। यह बड़ा ऑर्डर कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और यह साफ दिखाता है कि देश में रिन्यूएबल एनर्जी का सेक्टर तेजी से बढ़ रहा है। हाई-टेक पाइप्स इस तेजी से बढ़ते सेक्टर को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हाई-टेक पाइप्स लि. के चेयरमैन अजयकुमार बंसल ने कहा कि अगले तीन महीनों में साणंद यूनिट सेकंड फेज फर्स्ट में स्थित अपनी नई अत्याधुनिक फैक्ट्री से ऑर्डर पूरे किए जाएंगे। इस नई फैक्ट्री में सबसे अच्छी तकनीक और बेहतर उत्पादन प्रक्रियाएं हैं। यहां से बनने वाली उच्च गुणवत्ता वाली स्टील पाइप रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर के सख्त मानकों पर खरी उतरेंगी। हमें इस बात की बेहद खुशी है कि हमें इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के लिए ईआरडब्ल्यू स्टील पाइप का पसंदीदा सप्लायर चुना गया है।

शैल्बी लि.का मोनोग्राम टेक्नोलॉजीज के साथ करार

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल, शैल्बी लि. ने ऑर्थोपेडिक सर्जरी में विशेषज्ञता वाली एआई-संचालित रोबोटिक्स कंपनी मोनोग्राम टेक्नोलॉजीज इंक. के साथ रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। यह सहयोग भारत में एक बहुकेन्द्रीय क्लिनिकल ट्रायल(परीक्षण) आयोजित करने पर केंद्रित होगा, जिसमें मोनोग्राम के टीकेए सिस्टम की सुरक्षा और प्रभावशीलता को प्रदर्शित किया जाएगा। यह घुटने के रिप्लेसमेंट(प्रतिस्थापन) के लिए डिज़ाइन किया गया एक प्रिसिशन रोबोटिक सर्जिकल सिस्टम है।

शैल्बी लि. के अध्यक्ष डॉ. विक्रम शाह ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े आर्थोपेडिक हॉस्पिटल ग्रूप के रूप में, हमें अपने प्रतिष्ठित सर्जनों के साथ पाइपलाइन उत्पादों सहित बाजार में अग्रणी रोबोट और एडवांस टेक्नोलोजी का मूल्यांकन करने का विशेषाधिकार मिला है। हमने टीकेए सिस्टम और अगली पीढ़ी की पाइपलाइन को प्रत्यक्ष रूप से देखा है और निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वे जिस पर काम कर रहे हैं, वह आर्थोपेडिक चिकित्सा को हमेशा के लिए बदल देगा। हम मोनोग्राम के साथ इस साझेदारी से उत्साहित हैं और हमारा मानना है कि संयुक्त राज्य अमेरिका और विश्व स्तर पर उनकी सिस्टम के लिए बाजार की संभावनाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं और बहुत तेजी से बढ़ सकती हैं। हम मोनोग्राम टीम के साथ काम करने और आने वाले महीनों में अपने संबंधों को व्यापक बनाने के लिए उत्सुक हैं। मोनोग्राम टेक्नोलॉजीज इंक के सीईओ बेन सेक्सन ने कहा कि भारत में रोबोटिक्स का प्रवेश अभी कम है, लेकिन यह तेजी से आगे बढ़ रहा है और हमारा मानना है कि, सैकड़ों प्रणालियों के बाजार में बहुत संभावनाएं हैं।

डॉ. नलिनी शर्मा राष्ट्रीय सम्मेलन में बनी विशिष्ट वक्ता

उदयपुर (ह. सं.)। जयपुर में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन BTICON-2024 में डॉ. नलिनी शर्मा ने गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल का प्रतिनिधित्व किया। डॉ. नलिनी ने

सिजेरियन सेक्शन ऑपरेशन की विभिन्न पद्धतियों पर व्याख्यान दिया और किशोरावस्था में गर्भावस्था के दौरान होने वाली समस्याओं पर विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने बताया कि किशोरावस्था में गर्भधारण के दौरान गंभीर जोखिम की संभावना रहती है इसलिये किशोर युवतियों में शिक्षा, उचित परामर्श एवं सही समय पर चिकित्सीय देखभाल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

मेनारिया व राठौड़ को पीएचडी

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि ने शिक्षा संकाय में तारा मेनारिया को दक्षिणी राजस्थान के जनजाति क्षेत्र में वाणिज्य विषय के शिक्षण की स्थिति, मुद्दे, चुनौतियों एवं भावी संभावनाओं का अध्ययन, एवं वाणिज्य संकाय में रेवती रमनसिंह राठौड़ को भारत में फोरेंसिक अकाउंटिंग : एक अन्वेषणात्मक अध्ययन विषय पर शोधकार्य करने पर पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. तारा मेनारिया ने डॉ. अनिता कोठारी एवं डॉ. रेवती रमनसिंह राठौड़ ने अपना शोधकार्य डॉ. अनिता शुक्ला के निर्देशन में किया।

जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का समापन

उदयपुर (ह. सं.)। कानोड विद्या भारती संस्थान, उदयपुर द्वारा संचालित विद्या निकेतन उ. प्रा. विद्यालय में जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का समापन हुआ। मुख्य अतिथि विधायक उदयलाल डांगी ने कहा कि विद्या निकेतन संस्कार का केन्द्र है। अभिभावकों को विद्या निकेतन को समझना चाहिए।

मुख्य वक्ता जिला सचिव कालू लाल चौबीसा ने कहा हिन्दुओं का संगठित रहकर अपनी शिक्षा का प्रसार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए तभी हमारी संस्कृति बचेगी। अध्यक्षता भाजपा मण्डल अध्यक्ष अनूप श्रीमाली ने की। विशिष्ट अतिथि डॉ. हर्ष वर्धनसिंह राव, शिवराज छींपा, मंजू छींपा, रामेश्वर जाट, रोशन भावसार आदि थे। संस्थान के अध्यक्ष महेन्द्र जोशी, सचिव बंशीलाल, प्रधानाध्यापक राजेन्द्र व्यास ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन दीपक शर्मा ने किया।

प्रतियोगिता में बालक वर्ग में फतेहनगर प्रथम व वल्लभनगर द्वितीय रहे। तरुण वर्ग में झाड़ोल प्रथम व उदयपुर द्वितीय रहे। किशोर वर्ग में ऋषभदेव प्रथम व झाड़ोल द्वितीय रहे। कबड्डी बालवर्ग में वल्लभनगर प्रथम, ऋषभदेव द्वितीय, किशोर वर्ग में सेमारी प्रथम व फतहनगर द्वितीय रहे। तरुण वर्ग में झाड़ोल प्रथम व सेमारी द्वितीय रहे। सभी विजेताओं को विधायक उदयलाल डांगी ने पुरस्कृत किया।

लार्ज एंड मिड कैप फंड लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। आईटीआई असैट मैनेजमेंट कंपनी लि. (आईटीआई एएमसी) ने 21 अगस्त को आईटीआई लार्ज एंड मिड कैप फंड लांच कर दिया है। यह एक ओपन-ऐंडेड स्कीम है जो इक्विटी, इक्विटी संबंधित सिक्युरिटीज़, मुख्यत: शीर्ष 250 भारतीय कंपनियों में निवेश करेगी; ये ऐसी कंपनियां होंगी जिन पर देश की प्रगति का दारोमदार है। यह न्यू फंड ऑफर 4 सितंबर को बंद होगा। इस स्कीम का लक्ष्य है इस गतिशील क्षेत्र में सक्रियता से शामिल कंपनियों में निवेश करके दीर्घकालिक पूंजी वृद्धि प्रस्तुत करना, निवेशकों को विविधीकरण और पूंजी वृद्धि का मार्ग प्रदान करना। इस फंड का प्रबंधन विशाल जाजू और रोहन कोरडे करेंगे। दोनों ही आईटीआई म्यूचुअल फंड से जुड़े इक्विटी फंड मैनेजर हैं। इन्हें 13 वर्षों से अधिक का अनुभव है और बाजार की गहन जानकारी रखते हैं।

फ्लिपकार्ट ने 5 साल की यात्रा का जश्न मनाया

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने भारत के कारीगरों, बुनकरों, स्वयं सहायता समूहों, महिलाओं और ग्रामीण उद्यमियों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित एक कार्यक्रम के माध्यम से अपनी पहल फ्लिपकार्ट समर्थ की पांच साल की यात्रा का जश्न मनाया। इस कार्यक्रम में उद्योग जगत के 250 से अधिक अग्रणी व्यक्तियों, विक्रेताओं, कारीगरों, बुनकरों, शिल्पकारों और स्वयं सहायता समूहों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाना और उसे बढ़ावा देना था, जिसमें भारत सरकार के माननीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं शिक्षा राज्यमंत्री जयंत चौधरी, अतुल कुमार तिवारी (आईएएस), सचिव, एमएसडीई और श्रीमती सोनल मिश्रा (आईएएस), संयुक्त सचिव, एमएसडीई जैसी गणमान्य हस्तियों की उपस्थिति देखी गई। समर्थ कार्यक्रम के दौरान फ्लिपकार्ट की सप्लाई चेन ऑपरेशन एकेडमी (एससीओए) ने कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) के साथ एक एमओयू का आदान-प्रदान किया।

एचडीएफसी बैंक ने लॉन्च किया गीगा

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने विशेष रूप से गिग वर्कर्स/फ्रीलांसरों के लिए डिज़ाइन किए गए उत्पादों और सेवाओं का एक संपूर्ण वित्तीय सेट 'गीगा' लॉन्च किया है जो एक डिजिटल-फ़र्स्ट प्रोग्राम तथा फ्रीलांसरों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कई तरह के कस्टमाइज़्ड उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करता है। गिग इकोनॉमी व्हाइट-कॉलर पेशेवरों जैसे प्रबंधन सलाहकार, सॉफ़्टवेयर प्रोग्रामर और डिज़ाइनर, आर्किटेक्ट, निवेश सलाहकार से लेकर ग्रे कॉलर वर्कर तक फैली हुई है जो विशिष्ट व्यावसायिक/तकनीकी विशेषज्ञता रखते हैं ब्लू कॉलर और पिंक-कॉलर वर्कर जिसमें डिलीवरी पार्टनर तथा केयर गिवर्स भी गिग इकोनॉमी का हिसा है।

एचडीएफसी बैंक की गिग बैंकिंग, स्टार्ट-अप और सरकारी एवं संस्थागत व्यवसाय की प्रमुख सुश्री सुनाली रोहरा ने कहा कि हमें वित्तीय उत्पादों का एक व्यापक सेट लॉन्च करते हुए खुशी हो रही है, जिसे विभिन्न फ्रीलांसर सेगमेंट की कई गुना ज़रूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

जेके तायलिया फाउंडेशन की शुरूआत

उदयपुर (ह. सं.)। अनाथ और निर्धन बच्चों की मदद से लेकर कला और संगीत के क्षेत्र में कदम रखने वाले जरूरतमंद बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए उदयपुर में आज डॉ. जे.के. तायलिया फाउंडेशन की शुरुआत की गई है।

उदयपुर के समाजसेवी और इकोन के चेयरमैन, डॉ. जे.के. तायलिया, ने 1 सितंबर को अपने जन्मदिन से पहले इस फाउंडेशन को शुरू करने की घोषणा की है। आज उन्होंने उदयपुर शहर के अनाथालयों, वृद्धाश्रमों, विशेष जरूरतों वाले बच्चों और विद्यार्थियों के लिए बने आश्रयगृहों में जाकर न केवल उपहार वितरित किए, बल्कि अपने स्नेह और ममत्व भाव से सभी का दिल छू लिया।

तायलिया ने कहा कि इस फाउंडेशन के जरिए अनाथ बच्चों, दिव्यांग व्यक्तियों, बुजुर्गों और रात के आश्रयों में रहने वाले लोगों क पूरी सहायता करेगा और उदयपुर जिले में संगीत उद्योग से जुड़े लोगों की मदद और उत्थान के लिए भी काम करेगा। इसमें लोक संगीत, समकालीन संगीत और अन्य शैलियों के कलाकार भी शामिल हैं।

डॉ. तायलिया ने बच्चों से बातचीत की और कहानियां साझा कीं। समाज द्वारा अक्सर भूले गए बुजुर्गों ने डॉ. तयलिया में एक सच्चा दोस्त पाया, डॉ. तायलिया ने उन के साथ बैठकर उनकी बातें सुनीं। विशेष जरूरतों वाले व्यक्तियों के लिए उनके दौरे में जब डॉ. तायलिया ने उनकी चुनौतियों को समझने का प्रयास किया और उनकी जिंदगी को आसान बनाने के लिए सहायक उपकरण प्रदान किए उस पल ने सभी को भावुक कर दिया।

डॉ. तायलिया की ये यात्रा सिर्फ उपहार वितरण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह उनके समाज कल्याण के प्रति गहरे समर्पण का प्रतीक हैं। उनका उद्देश्य वहाँ के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करना था, इसलिए उन्होंने प्रत्येक संस्था के अनुसार ध्यानपूर्वक उपहार चुने, चाहे वो बच्चों के लिए खिलौने व किताबें हों, विशेष जरूरतों वाले विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक सामग्री हो, या बुजुर्गों के लिए आरामदायक आवश्यक वस्त्र हों, उन्होने दृष्टि बाधित बच्चो के लिए ब्रेल नही किन्तु स्पीकर सिस्टम के साथ ऑडियो बुक उपहार में दिया। डॉ. तायलिया के हर उपहार में सभी के प्रति गहरी चिंता झलक रही थी।

प्रो. भाणावत बने छात्र कल्याण अधिष्ठाता

उदयपुर (ह. सं.)। मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष एवं आईक्यूएसी डायरेक्टर प्रो. शूरवीर सिंह भाणावत् को छात्र कल्याण अधिष्ठाता नियुक्त किया है।

विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डॉ कुंजन आचार्य ने बताया कि प्रोफेसर भाणावत ने आईक्यूएसी डायरेक्टर रहते हुए कुलपति के निर्देशन में दस वर्षों से लंबित नैक इंस्पेक्शन संपन्न करवाया और विश्वविद्यालय को 'ए' ग्रेड मिली। उन्होंने प्राध्यापकों के वर्षों से लंबित सीएएस प्रमोशन को भी गति प्रदान की। प्रो भाणावत् के अब तक 70 से ज़्यादा रिसर्च पेपर , चार पुस्तकें, 28 से ज़्यादा पॉपुलर आर्टिकल प्रकाशित हो चुके है ।आप ब्लॉकचैन एकाउंटिंग रिसर्च प्रोजेक्ट के प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर के रूप में भी कार्य कर रहे । आपके अब तक 11 रिसर्च पेपर्स को विभिन्न कॉन्फ्रेंसेस में बेस्ट रिसर्च पेपर्स का अवार्ड मिला है । द इंस्टिट्यूट ऑफ़ चार्टर्ड अकाउंटेंट ने 2021 तथा 2022 में लगातार दो बार इंटरनेशनल रिसर्च अवार्ड से सम्मानित किया गया। आप भारतीय लेखा परिषद के नेशनल एकाउंटिंग टैलेंट सर्च के राष्ट्रीय सयोंजक भी है। इससे पूर्व भी भाणावत ने अगस्त 2021 से सितंबर 2022 तक छात्र कल्याण अधिष्ठाता रहते हुए 2022 के विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव सफलतापूर्वक संपन्न कराये। डॉ शिल्पा वर्डिया, धीरज मीणा आदि की उपस्थिति में उन्होंने गुरुवार को कार्यभार ग्रहण किया।

सेलर्स के लिए खुले नवाचार के रास्ते

उदयपुर (ह. सं.)। फ्लिपकार्ट ने देशभर में स्थानीय उद्यमियों को समर्थन देने की अपनी प्रतिबद्धता को मजबूती देते हुए जयपुर में प्रभावशाली सेलर कॉन्क्लेव (विक्रेता सम्मेलन) आयोजित किया। इसमें 800 से ज्यादा सेलर्स ने हिस्सा लिया, जिन्हें मार्केट ट्रेंड, कंज्यूमर इनसाइट्स और रणनीतिक विकास को लेकर अहम जानकारियों से भरपूर सत्र का फायदा मिला। फ्लिपकार्ट के फ्लैगशिप सेल इवेंट द बिग बिलियन डेज (टीबीबीडी) का 11 संस्करण नजदीक आ रहा है। इससे ठीक पहले इस कॉन्क्लेव ने सेलर्स को इस त्योहारी सीजन के दौरान बिक्री की संभावनाओं को अधिकतम करने और आगे बढ़ने के लिए जरूरी विशेषज्ञता, टूल्स एवं जानकारियों से लैस किया।

कॉन्क्लेव के दौरान फ्लिपकार्ट और सेलर्स के बीच संबंधों को मजबूत करने और नेटवर्किंग का भी व्यापक अवसर मिला। इससे एक ऐसे माहौल को बढ़ावा मिला, जिसमें सभी साझा हितों के साथ आगे बढ़ते हैं। इनोवेशन पर ध्यान केंद्रित करने की फ्लिपकार्ट की नीति इसके उन्नत एनालिटिक्स टूल्स और डाटा आधारित इनसाइट्स में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जिससे सेलर्स को अपनी ऑनलाइन रणनीतियों को बेहतर करने और प्रतिस्पर्धी क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, फ्लिपकार्ट ने दृढ़ता एवं दक्षता के महत्व पर भी जोर दियाऔर इस त्योहारी सीजन के दौरान ग्राहकों की बढ़ी मांग को पूरा करने के लिए लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता का लाभ लेने के लिए सेलर्स को प्रोत्साहित किया।

राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह में 157 भामाशाहों का अभिनंदन

भामाशाह देवतुल्य, उनके दिए एक-एक पैसे का होगा सदुपयोगः मदन दिलावर

उदयपुर (ह. सं.)। शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश में शैक्षणिक उन्नयन के लिए अहर्निश प्रयासरत है। भामाशाहों की ओर से दिए जा रहे सहयोग से गुणवत्तायुक्त शिक्षा, विद्यालयों में सुविधाओं के विस्तार पर कार्य हो रहा है। शिक्षा मंत्री होने के नाते भामाशाहों को विश्वास दिलाता हूं कि उनके द्वारा दान की गई राशि के एक-एक पैसे का सदुपयोग होगा। शिक्षा मंत्री 01 सितंबर को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्वामी विवेकानंद सभागार में शिक्षा विभाग के तत्वावधान में आयोजित 28वें राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने की। राज्यसभा सांसद चुन्नीलाल गरासिया, लोकसभा सांसद डॉ. मन्नालाल रावत, उदयपुर विधायक ताराचंद जैन, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, गोगुन्दा विधायक प्रताप गमेती, वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, राजसमंद विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी, पूर्व विधायक बंशीलाल खटीक, जिला प्रमुख ममता पंवार, महापौर जीएस टांक, समाजसेवी रवीन्द्र श्रीमाली, चंद्रगुप्तसिंह चौहान, प्रमोद सामर, उप महापौर पारस सिंघवी, उप जिला प्रमुख पुष्कर तेली, निदेशक संस्कृत शिक्षा पूनम सहित अन्य जनप्रतिनिधि बतौर विशिष्ट अतिथि मंचासीन रहे।

पहली बार राजधानी जयपुर से बाहर उदयपुर में आयोजित हो रहे राज्यस्तरीय समारोह में शिक्षा मंत्री दिलावर ने कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत ने वर्ष 1995 में भामाशाहों के सम्मान की परिपाठी शुरू की, जो आज भी जारी है। इस वर्ष प्रदेश के विद्यालयों के लिए 140 करोड़ रूपए से अधिक की राशि का सहयोग भामाशाहों के माध्यम से प्राप्त हुआ। उक्त राशि से विद्यालय में भौतिक सुविधाओं के साथ ही स्मार्ट क्लासेज, संसाधन आदि की व्यवस्था की जा रही है। जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने दधीचि, वामन अवतार व प्रताप-भामाशाह आदि की पौराणिक व ऐतिहासिक कथाओं के माध्यम से दान की महत्ता बताई।

समारोह में शिक्षामंत्री सहित सभी अतिथियों ने विभाग को दिए जाने वाले सहयोग और उसके सदुपयोग पर आधारित प्रशस्ति पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। शिक्षा विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल ने स्वागत उद्बोधन दिया। निदेशक आशीष मोदी, संयुक्त निदेशक उदयपुर महेंद्रकुमार जैन सहित अन्य अधिकारियों ने अतिथियों का साफा पहनाकर व पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इस दौरान श्रीनाथजी मंदिर मंडल नाथद्वारा की ओर से सुधाकर शास्त्री और प्रतिनिधियों ने शिक्षा मंत्री दिलावर को दुशाला और उपरणा ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया। हल्दीघाटी के मोहनलाल श्रीमाली ने महाराणा प्रताप का चित्र भेंट किया।

राज्यस्तरीय समारोह में प्रदेश भर के विद्यालयों में दान देने वाले 157 भामाशाहों का प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया गया। शिक्षामंत्री दिलावर व टीएडी मंत्री खराड़ी सहित अन्य ने भामाशाहों को शिक्षा विभूषण, शिक्षा भूषण की उपाधि से नवाजा। राज्य स्तरीय समारोह के नोडल अधिकारी व संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) महेंद्र कुमार जैन ने बताया कि सर्वाधिक 14 करोड़ 11 लाख 57 हजार 824 रुपये दान देकर न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि. रावतभाटा (राजस्थान) ने सबसे बड़ा दानवीर बनने का गौरव हासिल किया है।

दूसरे नंबर पर 8 करोड़ 73 लाख 15 हजार 21 रुपये दान देकर चंबल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि. रहा। मोडिसन चौरिटेबल ट्रस्ट मुंबई ने 8 करोड़ 50 लाख रुपये, टेम्पल बोर्ड नाथद्वारा ने 6 करोड़ 97 लाख रुपये, क्यूआरजी फाउंडेशन अलवर ने 5 करोड़ 71 लाख 94 हजार 793 रुपये, गौतम आर. मोरारका, उत्तरप्रदेश ने 3 करोड़ 78 लाख 25 हजार 174 रुपये, एसएम सहगल फाउंडेशन गुरूग्राम ने 3 करोड़ 51 लाख 85 हजार 567 रुपये, हल्दीराम एजुकेशनल सोसायटी नई दिल्ली ने 3 करोड़ 44 लाख 13 हजार 616 रुपये, जीव जतन जन कल्याण ट्रस्ट पश्चिम बंगाल ने 2 करोड़ 75 लाख रुपये, गोपाल राठी, भीलवाड़ा ने 2 करोड़ 63 लाख रुपये, हिंदुस्तान जिंक लि. हुरड़ा भीलवाड़ा ने 2 करोड़ 15 लाख 31 हजार 777 रुपये, रवीन्द्र हेरियस प्रा. लि उदयपुर ने 2 करोड़ 12 लाख 58 हजार 983 रुपये, नटवरलाल पुरोहित, सिरोही: 2 करोड़ 5 लाख 15 हजार 499 रुपये, शंकर लाल पितलिया भीलवाड़ा ने 2 करोड़ 1 लाख 22 हजार 196 रुपये, हिंदुस्तान जिंक लि. कायड माइंस अजमेर ने 1 करोड़ 80 लाख 42 हजार रुपये, एचडीएफसी बैंक लि. जयपुर ने 1 करोड़ 73 लाख 52 हजार 203 रुपये दान किए। इसी प्रकार आरएचआई मेग्रेसिटा इंडिया लि. भिवाड़ी ने 1 करोड़ 60 लाख 70 हजार 27 रुपये, जिंक स्मेल्टर, देबारी उदयपुर ने 1 करोड़ 53 लाख 22 हजार 98 रुपये, वंडर सीमेंट लि., निम्बाहेड़ा चित्तौड़गढ़ ने 1 करोड़ 48 लाख 30 हजार 975 रुपये, जयपुर राउंड टेबल ट्रस्ट ने 1 करोड़ 32 लाख 21 हजार रुपये, उदयपुर राउंड टेबल ट्रस्ट ने 1 करोड़ 19 लाख 10 हजार 800 रुपये दान एचजी इंफ्रा इंजीनियरिंग लि. जयपुर ने 1 करोड़ 15 लाख 95 हजार 37 रुपये, (इंडिया इन्फोलाइन फाउंडेशन ने 1 करोड़ 15 लाख 3 हजार 381 रुपये, हिंदुस्तान जिंक लि. जावर माइंस ने 1 करोड़ 14 लाख 31 हजार 765 रुपये, दिव्या पत्नी आलोक खंडेलवाल जयपुर ने 1 करोड़ 8 लाख 90 हजार 696 रुपये, मोज़ेक इंडिया प्रा. लि., गुड़गांव ने 1 करोड़ 8 लाख 44 हजार रुपये, मोतीलाल रायचंद ने 1 करोड़ 6 लाख 30 हजार रुपये, साउथ वेस्ट माइनिंग लि. ने 1 करोड़ 5 लाख 20 हजार 483 रुपये, मयूर यूनिकोटर्स लि., जयपुर ने 1 करोड़ 4 लाख 81 हजार 354 रुपये, चौकसी हेरियस प्रा. लि. ने 1 करोड़ 1 लाख 99 हजार 43 रुपये वबालचंद मोतीराम शर्मा, मुंबई ने 1 करोड़ रुपये दान किए हैं। इन भामाशाहों को शिक्षा विभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया।

दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह में 51 जोड़े बने हमसफर

उदयपुर (ह. सं.)। नारायण सेवा संस्थान के बड़ी स्थित परिसर में 42वें नि:शुल्क दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह में 51 जोड़े एक-दूसरे के हमसफर बने। देशभर से बड़ी संख्या में आए अतिथियों व धर्म माता-पिताओं ने इन जोड़ों को प्रधानमंत्री के आह्वान 'एक पेड़ मां के नाम' थीम पर नवविवाहितों को तुलसी, अशोक, बिल्व और पीपल के पौधे भेंट करते हुए दाम्पत्य जीवन हरा भरा रहने का आशीर्वाद दिया।

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' सहसंस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, निदेशक वन्दना अग्रवाल, ट्रस्टी देवेंद्र चौबीसा व विशिष्ट अतिथि दिल्ली के कुसुम गुप्ता, नरेंद्रपालसिंह, सत्यनारायण गुप्ता, बृजबाला, अलवर के पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा, गुड़गांव के नितिन मित्तल, सूरत के हरीश कुमार, मुंबई के सतीश अग्रवाल और उदयपुर के संतोषसिंह शलूजा ने वैदिक मंत्रोचार के बीच गणपति की छवि के समक्ष दीप प्रज्वलित कर विवाह समारोह की पारंपरिक रस्मों की शुरुआत की। इससे पूर्व परिसर में दूल्हा- दुल्हनों की गाजे-बाजे के साथ बिंदोली निकाली गई। हाड़ा सभागार के द्वार पर दुल्हों ने नीम की डाली से तोरण रस्म का निर्वाह किया। इसके बाद श्रीनाथजी की झांकी की आरती के बाद वरमाला एवं आशीर्वाद समारोह संपन्न हुआ। वरमाला के बाद 51 वेदियों पर नियुक्त आचार्यों ने मुख्य आचार्य के निर्देशन में वैदिक मंत्रों के साथ पवित्र अग्नि के सात फेरों की रस्म अदायगी के साथ पाणिग्रहण संस्कार संपन्न करवाया। इस दौरान जूते छुपाई और नेग अदायगी रस्म भी निभाई गयी। विदाई के वक्त जोड़ों को गृहस्थी का आवश्यक सामान बर्तन सेट, गैस-चूल्हा, संदूक, टेबल-कुर्सी, बिस्तर, घड़ी, पंखा, परिधान, प्रसाधन सेट, मंगलसूत्र, कर्णफूल, बिछिया, पायल, लोंग, अंगूठी व अन्य सामग्री भी प्रदान की गई।

जीवन की मीठी चुभन ही लिखने की प्रेरणा देती है - डॉ. महेन्द्र भानावत

प्रभात कुमार सिंघल

देश के विभिन्न प्रांतों में ग्रामीण और आदिवासी अंचलों में बार-बार पहुँच कर उनके माहौल में साथ रहना, संवाद करना, उनकी जीवनशैली, रहन-सहन, आस्था-विश्वास, धार्मिक परंपराएं, गीत-नृत्य-गायन परम्पराएं, वेशभूषा, खानपान, प्रकृति प्रेम, लोकानुरंजन के माध्यम को लम्बे समय तक देखना, विश्लेषणात्मक दृष्टि से समझना, सर्वेक्षण, मूल्यांकन करना, महसूस करना और लिख कर दस्तावेजीकरण करना आसान नहीं है। भाषा की समस्या, घर का आराम छोड़ना, असुविधाओं का सामना और अजनबियों से तालमेल की दुविधा से दो चार होना पड़ता है। इन अंचलों की संस्कृति को सम्पूर्ण रूप से जानने के लिए बार-बार जाना पड़ता है। लक्ष्य होता है कि संस्कृति का कोई भी पक्ष अछूता न रह जाए। लोक संस्कृति के अध्ययन का यह कार्य जितना कठिन है उतना ही भी श्रमसाध्य है। इसे लोकसंस्कृति मर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत से ज्यादा कौन जान सकता है जिन्होंने इसे किया और जिया है।

देश की आंचलिक लोकसंस्कृति खास कर जनजातीय संस्कृति पर लिखने वाले गिने-चुने लेखकों में राजस्थान में उदयपुर के ख्यातीनाम साहित्यकार और पत्रकार डॉ. महेन्द्र भानावत ने देश के विभिन्न प्रांतों में भ्रमण कर अथक परिश्रम कर वहां की कलाधर्मी जातियों, लोकानुरंजनकारी प्रवृत्तियों, जनजाति सरोकारों तथा कठपुतली, पड़, कावड़ जैसी विधाओं पर सृजन कर एक सौ से ज्यादा किताबें लिख कर देशव्यापी ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय पहचान खड़ी की है। इनका लोकसाहित्य विश्व लोकसाहित्य बन गया है। साहित्यवारिधि, लोककला मनीषी, सृजन विभूति, लोकसंस्कृति रत्न, श्रेष्ठ कला आचार्य जैसे सम्मानों, स्वर्ण-रजत पदकों से सम्मानित डॉ. भानावत ने लोकसंस्कृति को स्वयं जा कर न केवल देखा वरन उनके साथ रह कर समझा, महसूस किया और एक सर्वेक्षक के रूप में गहन सर्वेक्षण भी किया है। लोक कलाओं के प्रचार और संरक्षण के लिए कठपुतली जैसी लोककला पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक प्रशिक्षण शिविर और कार्यशालाएं आयोजित की और देवीलाल सामर के साथ लोकानुरंजन मेलों के आयोजन की परम्परा आरम्भ की।

डॉ. महेन्द्र भानावत

राजस्थान में कहानी-कथन की चार शैलियों कथा-कथन, कथा-वाचन, कथा-गायन तथा कथा-नर्तन जैसी शैलियों को लिपिबद्ध कर किताबों के रूप में उनका दस्तावेजीकरण भी किया। लोक प्रचलित कहानियों पर डॉ. भानावत बताते हैं कि राजस्थान में कहानी को 'वात' नाम से भी जाना जाता है। वात के साथ 'ख्यात' नाम भी प्रचलन में है। कुछ जातियों का काम ही कहानियाँ सुनाना रहा है। इन्हें बड़वाजी, रावजी अथवा बारैठजी कहते हैं, जो कहानियाँ सुनाने की एवज में यजमानों से मेहनताना स्वरूप नेग प्राप्त करते है।

कहानी का मजा पढ़ने में नहीं, उसके सुनने तथा सुनाने में है। सुनाई जाने वाली कहानियाँ ही अधिक रसमय लगती हैं। कहानी चाहे कोई कहता हो, उसका हुंकारा अवश्य दिया जाता है। सुनने वालों में से किसी के द्वारा हुंकारा 'हूँ' कहकर दिया जाता है। हुंकारा देनेवाले को 'हुंकारची' कहते हैं। हुंकारा कहानी में जान लाता है और उसकी कथन-रफ्तार को बनाए रखता है। अत्यंत अजीबोगरीब तथा मीठी-मजेदार लगनेवाली ये लोककथाएँ निराश जीवन में आशा का संचार करती हैं तो कर्मशील बने रहने के लिए जाग्रत भी करती हैं। ज्ञान का भण्डार भरती हैं तो कल्पनाओं के कल्पतरु बन हमारी उत्सुकता और जिज्ञासा को शंखनाद देकर सवाया बनाती हैं। इन लोककथाओं में हास्य है तो विनोद भी; व्यंग्य है तो रुदन भी; जोश है तो उत्साह भी, सीख है तो उपदेश भी; कर्तव्य के प्रति समर्पण है तो मर-मिटने का जज्बा भी। इनके माध्यम से बच्चे अपनी स्मरणशक्ति, कल्पनाशक्ति और विचारशक्ति का संचयन करते हैं। सैकड़ों लोकनृत्य देखने के बाद डॉ. भानावत की मान्यता है कि लोकनृत्य मुख्यत: समूह की रचना हैं। ये सामुदायिक रूप में ही फलते-फूलते एवं फलित होते हैं। कोई कबीला या जाति नृत्य विहीन नहीं है। पूरी प्रकृति लयबद्ध, रागबद्ध, संगीतबद्ध, समूहबद्ध है। सब थिरक रहे हैं। उसमें फिरकनी सी समूहबद्ध अल्हड़ता है। इन्हीं नृत्यों से प्रेरणा पाकर पं. नेहरू ने गणतंत्र दिवस पर दिल्ली में नृत्योत्सव का शुभारम्भ किया। लोककला-संस्कृति का सर्वाधिक अध्ययन राजस्थान में हुआ है।

लोक को हमारे यहां विविध रूपों, रंगों और ढंगों में देखा गया है किंतु भारतीयता के संदर्भ में यह लोक ही हमारे देश की असली पहचान है। यही सच्ची आत्मा और शरीर दोनों है। इस दृष्टि से देश की संपूर्ण प्रदर्शनकारी कलाओं का परीक्षण किया जाए तो हमें लगेगा कि सामुदायिक क्षेत्र में केवल वे ही कलाएं रह गई हैं जो संस्कारों, आस्थाओं, परंपराओं और अनुष्ठानों के साथ जुड़ी हैं। लोकजीवन का अध्ययन पुरातत्व, इतिहास, राजनीति, धर्म, दर्शन, अर्थ, समाज, नाट्य, नृतत्व आदि को सांचों-सीखचों में बांट कर नहीं देखता। हमने बहुत सारी चीजें बांट रखी हैं। उनका सोच है कि राजस्थान में लोककलाओं की एक अकादमी या एक विश्वविद्यालय ही होना चाहिए।

लोक संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए लोककला, रंगायन, ट्राइब, रंगयोग, पर्यटन दिग्दर्शन, पीछोला, सुलगते प्रश्न जैसी शोध पत्रिकाओं का संपादन करने के साथ ही इन्होंने कई समाचार-पत्रों में स्तंभकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। देश की 500 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में इनके दस हजार से अधिक आलेख छप चुके हैं। राजस्थान की संगीत नाटक अकादमी, राजस्थानी साहित्य भाषा, साहित्य संस्कृति अकादमी, जवाहर कला केंद्र, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के सदस्य एवं फेलो रह चुके हैं।

साहित्यिक प्रकाशन :

जीवन के 6 दशकों में लिखी गई 100 से ज्यादा पुस्तकों में करीब एक दर्जन से अधिक पुस्तकें आदिवासी जीवन-संस्कृति पर लिखी। इस दृष्टि से राजस्थान के अलावा गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश तथा तमिलनाडु की खोज यात्राएं महत्वपूर्ण रहीं। राजस्थानी के लोकदेवता तेजाजी, पाबूजी, देवनारायण, ताखा-अम्बाव, काला-गोरा, राजस्थान के लोकदेवी-देवता तथा भीली लोकनाट्य गवरी पर स्वतंत्र पुस्तकें प्रकाशित हुई। बालसाहित्य की आधा दर्जन पुस्तकें भी आई। मेंहदी पर 'मेंहदी राचणी', मांडणों पर 'मरवण मांडे मांडणा' तथा लोकगीतों पर 'काजल भरियो कूंपलो' एवं 'मोरिया आछो बोल्यो' का पर्यटन साहित्य के रूप में प्रकाशन हुआ।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर से 'राजस्थान के लोकनृत्य', 'गुजरात के लोकनृत्य' तथा 'महाराष्ट्र के लोकनृत्य', देवस्थान विभाग राजस्थान, उदयपुर से 'राजस्थान के लोकदेवी-देवता' , आदिवासी लोककला परिषद, भोपाल द्वारा 'पाबूजी की पड़' तथा 'पांडवों का भारत,' जवाहर कला केन्द्र, जयपुर द्वारा 'लोककलाओं का आजादीकरण', ट्राईबल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, उदयपुर द्वारा 'उदयपुर के आदिवासी' तथा 'कुंवारे देश के आदिवासी' तथा 'जनजातियों के धार्मिक सरोकार', साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राजस्थानी में 'कविराव मोहनसिंह', नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर द्वारा 'मसखरी', हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर द्वारा 'भारतीय लोकमाध्यम' और अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत रिचर्स एवं शोध संस्थान, चैन्नई द्वारा 'जैन लोक का पारदर्शी मन' डॉ. भानावत की उल्लेखनीय कृतियां हैं।

भारतीय नाट्य संघ, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त प्रोजेक्ट के अंतर्गत राजस्थान के लोकनाट्य विषयक शोधाध्ययन एवं रिपोर्ट लेखन, मणिपुर एवं त्रिपुरा की आदिवासी जीवन-संस्कृति का सर्वेक्षण-अध्ययन एवं रिपोर्ट लेखन, डॉ. मोतीलाल मेनारिया के निर्देशन में महाराणा जवानसिंह लिखित पदों का चार हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर पाठ संपादन कर 'ब्रजराज-काव्य-माधुरी' नाम से पुस्तक प्रकाशन, भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर में निदेशक के दौरान- विविध लोकधर्मी कला-विधाओं पर करीब दो दर्जन पुस्तकों का प्रकाशन अन्य साहित्यिक उपलब्धियां इनकी झोली में हैं। इनकी पहली पुस्तक 'राजस्थान स्वर लहरी' भाग एक थी जबकि इसी क्रम में भाग दो तथा भाग तीन का संपादन अभी भी अप्रकाशित है। अनेक पुस्तकों का डॉ. भानावत ने संपादन भी किया है। विभिन्न पाठ्यक्रमों के किया पाठ लेखन का अवसर भी इन्हें मिला।

साहित्यिक- सांस्कृतिक सेवाएं :

भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर में शोध सहायक 1958-62 के दौरान राजस्थान के विभिन्न अंचलों के विविध पक्षीय लोककलाकारों के बेदला गांव में पन्द्रह-पन्द्रह दिन के चार प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन-संयोजन किया। उस समय इस प्रकार का यह संभवत: विश्व का पहला शिविर था। यहीं नागौर जिले के जीजोट गांव के नाथू भाट के कठपुतली दल को चिन्हित कर कलामण्डल में उसकी कला-कारीगरी का बारीकी से अध्ययन किया गया तथा परंपरागत अमरसिंह राठौड़ खेल की ही भावभूमि में कलामण्डल के कलाकारों द्वारा 'मुगल दरबार' नामक खेल की रचनाकर नवीन परिवेश दिया गया।

इसी कठपुतली खेल को रुमानिया में 1965 में आयोजित तृतीय अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में सरकार ने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में प्रदर्शन के लिए भेजा जहां कलामंडल के दल को विश्व का सर्वोच्च प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। लोककला संग्रहालय की स्थापना एवं परिकल्पना सम्बन्धी सामग्री एकत्रीकरण तथा विविध विधाओं का संग्रह-प्रकाशन, समय-समय पर राष्ट्रीय लोककला संगोष्ठियों के आयोजन में ख्यात विद्वानों के आलेखों पर 'लोककला : मूल्य और संदर्भ' तथा 'लोककला : प्रयोग और प्रस्तुति' नामक दो पुस्तकों का संपादन-प्रकाशन डॉ. भानावत की विशिष्ट देन है। इसके अलावा कठपुतली कला पर राजस्थान के अध्यापकों एवं देश-विदेश के लोगों को विविध शैलियों में प्रशिक्षण-संयोजन, यूनीसेफ द्वारा प्रदत्त प्रोजेक्ट के तहत कठपुतली कला विषयक प्रशिक्षण, नाट्य-लेखन, मंचन एवं प्रकाशन तथा अखिल भारतीय कठपुतली समारोहों के आयोजन कर डॉ. भानावत ने पूरे देश के लोकविज्ञों का ध्यान आकर्षित किया है।

विशिष्ट व्याख्यान :

'भक्तिकाल में मीरांबाई का स्थान', आदिवासी परम्परा, परिवेश एवं चुनौतियां' 'भारतीय कला जगत पर राजस्थानी लोककलाओं का प्रभाव', 'राजस्थान के लोकगीतों में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव-बोध' , 'मीरांबाई : नवीन खोज-दृष्टि', 'राजस्थान का रंगधर्मी वैविध्य', 'मांडणी कला', 'आदिवासी जीवनधारा और चुनौतियां' विषय पर विशेष वक्तव्य, 'आदिवासी जीवन संस्कृति के रखरखाव, एवं 'सांस्कृतिक उन्नयन और लोकधारा' आदि विषयों पर देशभर में आयोजित गोष्ठियों में शोध आलेखों का वाचन, व्याख्यान और प्रस्तुतिकरण करने की कला में डॉ. भानावत सर्वथा अतुलनीय ही हैं।

गौरव के पल :

एक साहित्यकार के लिए इससे बढ़कर गौरव क्या होगा कि लोकसाहित्य-संस्कृति-कला के अछूते एवं अज्ञात विषयों पर सर्वाधिक लेखन एवं प्रकाशन के फलस्वरूप 50 से अधिक शोध-छात्रों ने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। देश-विदेश के एक हजार से अधिक व्यक्तियों को शोध-विषयों से संदर्भित मार्गदर्शन दिया। विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा प्रस्तुत शोधप्रबन्धों का मूल्यांकन एवं मौखिकी-परीक्षण करने का आपको मौका मिला। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केंद्रों से गत 40 वर्षों से साहित्य एवं लोकधर्मी विविध विधाओं पर आलेख, संस्मरण, परिचर्चा तथा काव्यपाठ का प्रसारण आपकी अन्यतम उपलब्धि है।

सम्मान एवं पुरस्कार :

लोक संस्कृति और साहित्य लेखन के लिए देश भर की अकादमियों, संस्थाओं, सरकारी और निजी प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा आपको लगभग 6 दर्जन पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा लोक साहित्य संस्कृति- कला विषयक योगदान हेतु 51 हजार रूपये का विशिष्ट साहित्यकार सम्मान, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा भारतीय लोकसाहित्य संस्कृति-कला विषयक योगदान हेतु 2.50 लाख रूपये का लोकभूषण पुरस्कार, जोधपुर स्थापना दिवस 2022 पर पूर्व महाराजा गजसिंह द्वारा 51 हजार रूपये का मारवाड़ रत्न कोमल कोठारी पुरस्कार, संत मुरारी बापू द्वारा प्रतिस्थापित 51 हजार रूपये का श्री काग लोक साहित्य सम्मान, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयुपर द्वारा शिल्पग्राम उत्सव के उद्घाटन पर दो लाख पच्चीस हजार रूपये का 'डॉ. कोमल कोठारी लोककला पुरस्कार', कोलकाता के विचार मंच द्वारा 51 हजार रूपये का 'कन्हैयालाल सेठिया पुरस्कार' सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा बोधि सम्मान, कला समय लोकशिखर सम्मान', पं. रामनरेश त्रिपाठी नामित पुरस्कार', 'महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार', 'स्वर्ण पदक', 'साहित्य वारिधि' कला रत्न, विभूषण सम्मान, 'लोककला मनीषी अलंकरण', 'सृजन विभूति सम्मान', 'लोकसंस्कृति रत्न अलंकरण', 'श्रेष्ठ कला आचार्य अलंकरण', 'लोककला सुमेरु' जैसे सम्मान एवं अलंकरण पाने वाले डॉ. भानावत एकमात्र अकेले ही हैं।

परिचय :

प्रसिद्ध साहित्यकार और लोक संस्कृति मर्मज्ञ डॉ. महेंद्र भानावत का जन्म राजस्थान में उदयपुर जिले के कानोड़ कस्बे में 13 नवम्बर 1937 को पिता स्व. प्रतापमल भानावत और माता स्व. डेलू बाई के आंगन में हुआ। आपने हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर और 'राजस्थानी लोकनाट्य परम्परा में मेवाड़ का गवरीनाट्य और उसका साहित्य' विषय पर पीएच.डी. की शिक्षा प्राप्त की। आपके तीन संतानें एक पुत्र डॉ. तुक्तक भानावत और दो पुत्रियां डॉ. कविता मेहता एवं डॉ. कहानी भानावत (मेहता) हैं। बचपन में ही पिता का साया सर से उठ गया। आर्थिक विपन्नता इतनी थी कि गांव वाले तो क्या रिश्तेदार तक रुख नहीं मिलाते थे। मां ने हिम्मत नहीं हारी और हौंसला बनाए रखते हुए इन्हें और इनके बड़े भाई नरेन्द्र भानावत ने दोनों को पढ़ाया। मां कभी किसी के आगे झुकी नहीं और अपना स्वाभिमान बनाए रखा। इन्हीं गुणों को साथ लेकर डॉ. भानावत ने जैसे तैसे स्नातक कर उदयपुर में आजीविका के लिए काम ढूंढते बड़ी मुश्किल से भारतीय लोककला मण्डल में अवसर पाया। संस्था के संचालक देवीलाल सामर ने इनके गुणों को पहचान इन्हें योग्य से योग्यतर बनने के अनेक अवसर प्रदान किये। यहां भी कई परिस्थियों से गुजरने के बाद डॉ. भानावत अपना स्थान बना पाए।

समय गुजरता गया गांव वाले और रिश्तेदार भी पूछने लगे। बचपन में गांव के पोस्ट ऑफिस में जाकर डाक में आई पत्र-पत्रिकाएं पोस्टमैन के सहयोग से पढ़ने लिखने और छपने की प्रेरणा पाई। बड़े भाई कविताएं लिखते थे और जब गर्मियों की छुट्टी में घर आते थे, वे सबको कविता सुनाते थे। यहीं से कविता सुनने और लिखने का बीजारोपण हुआ और चौथी कक्षा में पहली कविता लिखी। स्कूल की बाल सभाओं में कविता पढ़ते थे। उस समय के पत्र-पत्रिका में कविता छपने से हौंसला बढ़ा। कवि रूप में पहचान बनी। जीवन के उत्तरार्द्ध में अपने पुत्र डॉ. तुक्तक भानावत के सहयोग से पाक्षिक समाचारपत्र 'शब्दरंजन' की शुरूआत की और कई साहित्य एवं कला-संस्थानों में सदस्य के रूप में अपनी सक्रियता दिखाई। उम्र के लंबे पड़ाव पर आज भी डॉ. भानावत लेखन, शोध निर्देशन और पत्रकारिता में पूर्ण सक्रिय हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।